भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 9 | अंक 08 | उदयपुर बुधवार 01 मई 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

मानवेतर विवाह गीतों में फल-फूल, पेड़-पौधे तथा शाक-सब्जियों के ठाठ

- मालती शर्मा -

यह चराचर विश्व युग्ममय है। द्वन्द्वमय है, नर-नारी मय है। इसमें हर एक इकाई अपने में अधूरी है, एकाकी है। मनुष्य का मन-मस्तिष्क सभ्यता के सवेरे से ही सृष्टि भर में इन्हें पूर्ण देखने के लिए प्रयत्नशील रहा है। मानव मनीषा ने अपने जीवन और चिन्तन में, धर्म, दर्शन, कला साहित्य और संस्कृति में एकाकी इकाइयों के अधूरेपन को भरने के लिए विविध कल्पनाएं और संरचनाएं की हैं जिनमें सर्वोत्तम परिकल्पना है-विवाह। विवाह की परिकल्पना में उसने इकाइयों की अपूर्णता को युगनद्धता ही नहीं दी, वरन् सामाजिक धरातल पर जन्म-जन्मान्तर के संग-साथ में सृष्टि श्रृंखला की अनवरतता को स्वस्थ पवित्र पीठिका भी दी है। जिसमें दो अधूरी अपूर्ण इकाइयां अपने आन्तरिक और बाह्य जीवन की पुकारों के उत्तर-प्रति उत्तर और चरितार्थता पाती हैं। समाज में एक समाज रचती हैं।

एक ओर जहां मनुष्य के प्रेमापूरित हृदय ने चकवा-चकवी, परेवा-परेवी, सारस युगल, मोर-मोरनी जैसे अभिन्नत रंग पक्षी-युग्मों की कथा-सृष्टि की; प्रेम काकली की गुटर गूं और व्यथा को अपने गीतों में गूंथा तो दूसरी ओर वृक्षों के गले में लताओं की बाहें डाली हैं। चंचल यौवनवती नदियों को सागर की गहन गंभीर बाहों में समेटा है।

उन्हें लहरों की चूड़ियां, मूंगे के बिछुए, शंख, सीपियों के चन्द्रहार पहनाकर क्षितिज से उठते सूरज का सौभाग्य टीका लगा सुहागिन बनाया है। विवाह मानव हृदय का ऐसा कसूंबी रंग है जिसमें डुबोने से उसने सृष्टि में कुछ भी शेष नहीं छोड़ा है। इसके मंगलमय आंचल तले सबको ढक लिया है। निरवंशी को उसने इसीलिए असगुनी माना है क्योंकि उसका हृदय फैलना नहीं जानता।

शिष्ट-अभिजात साहित्य में शिव-पार्वती विवाह को छोड़कर अन्य कोई दूसरा प्रमुख-कथा आख्यान नहीं है जिसमें मानवेतर जीव सृष्टि भी सहभावी होती है, लेकिन लोकसाहित्य में लोकमानम ने इस रंग के रंग में, जीवन अरूण की अरूणाई में पेड़-पौधों, फल-भाजियों व पशु पक्षियों सभी के ब्याह रचा कर सभी को रंग डाला है।

मैं महाराष्ट्र के आन्तरिक भागों के लोकगायकों के स्वर साम्राज्यों में बसे कुछ ऐसे ही विवाहों में शामिल हुई जो इनकी मर्मज्ञ अक्का (डॉ. सरोजिनी बाबर) के घर, नारियल सुपारी के धवदों धपसों की शीतल सुगंधित छाया में, विविध रंगी स्वर वाद्यों की धुनों में सम्पन्न हुए। तब उमंग तरंग जैसे समा ही नहीं पा रही थी। उनमें प्रमुख हैं-

(1) अंजीर का विवाह
(2) पेड़ पौधों का विवाह (आम का ब्याह)
(3) मेथी (बाई) का विवाह
(4) कुत्ते / बरात गये

प्रथम तीन व्यवस्थित विवाह गीत हैं। चौथा अपेक्षाकृत छोटा प्रकीर्ण गीत।

विवाह गीतों की संरचना में किसी भी प्रान्त-अंचल के स्थानीय रंग वहां की लोकरीतियां प्रमुख संघटक तत्व होते हैं। इन्हीं से उन्हें संरचना मिलती है, व्यक्तिमत्ता और अस्मिता भी। मराठी के विवाह गीतों में क्रमश: फलों, पेड़ पौधों और शाक-भाजियों का अपना-अपना 'समाज' है, वंश-कुल गुण धर्म हैं। लोकसाहित्यिक भूगोल की परिसीमाएं हैं कि यहां विवरणित अनेक ऐसी वनस्पतियां, फल-शाक-भाजी हैं जो अन्य प्रदेशों में नहीं होतीं।

अनेक ऐसी रीतियां हैं जो केवल यहीं की विशेषताएं हैं। महाराष्ट्र में विवाह पूर्व वर-वधू और उसके माता-पिता को भोजन के लिये बुलाया जाता है जिसे क्रमश: 'केलवण' व 'ब्याहीभोज' कहते हैं। 'अंजीर के विवाह' की शुरुआत 'केलवण' के उल्लेख से होती है-

कोयरीत कोयरी केलवली कोयरीचं चांगुलयण
बागसरीचं मागणं अंजीर नवरा सुजन तव्हा बाजत गाजत

अर्थात् कैरी ने कैरी का न्यौता किया। बगीचा कैरी की मंगल कामना बार-बार करता रहा, जिसे अंजीर जैसा सज्जन दूल्हा मिला है। (तब बाजे गाजों के साथ। यह गीत की टेक है।)

इसी प्रकार की एक अन्य रीति है विवाह निश्चित होने पर लग्न पत्रिका सर्वप्रथम गणपति को देने जाना। पूना में यह मान कस्बा पेठ के गणपति को प्राप्त है। मेथी के विवाह गीत का प्रारंभ इसी रीति के उल्लेख से होता है -

मेथी बाई चे लगीन निघाले
धाड़ा देवाला लगू पत्रिका

अर्थात्, अरे, मेथी बाई की शादी का मुहूर्त निकल आया है। गणेशजी को लग्न पत्रिका भेजो।

उक्त गीतों में गुम्फित यही स्थानीयता यदि एकओर लोकगायकों की कल्पना की उड़ानों को यथार्थ की धरती और विश्वसनीयता देती है तो दूसरी ओर एक विशिष्ट रंग-गंध की चित्रात्मकता भी। इन दो तारों में पिरोयी गई चिन्ता, गर्व, परस्पर मानापमान भाव, रूठना, झगड़ना, बीचबचाव, उल्लास, उमंग, सहायता इत्यादि मानवीय भावनाओं का संस्पर्श इन गीतों को अनूठी हृदयग्राहिता प्रदान करता है।

'आम के ब्याह' में बगीचे का चित्र है। देखें, क्या चल रहा है वहां -

बड़ पिंपल दोधे भाई विचार करतील काही
थोरसा पहावा तुम्हीं ब्याही आंब्याला नवरी पाहिजे
निंब होता मोठा राजा त्यांच्या होता दोन भाजा
खजूरी जांभुली सहजा तीची कन्या नवरी

बड़ पीपल दोनों भाई-भाई कुछ सलाह सूत कर रहे हैं। बड़ा कहता है-भाई ! तुम समधी भी बड़ा श्राष्ठ देखो पर आम को बहू चाहिये तो उसमें दिक्कत क्या है। नीम बहुत बड़ा राजा है उसकी दो पत्तियां हैं खजूरी और जामुन। उनकी कन्या कुंवारी हैं बस शादी जम गई। सारे बाराती एकत्र हो गये। मंडप छब गया। खजूर बधू की मां है और नारली (नारियल का स्त्रीलिंग) वर की मां बनी। अव बारात का स्वागत और विवाह देखें-

ताड़ा हाती हेलाल परटिण बोलावा सराठी
पायघड्या घाली नेटकी रिंगणीच्या हाती वाटी
पाय घासे डोर ली
हामत हासत पिंपली आली भांग सुग्रण कोठे गेली ?
तिची खीर गोड झाली चहू मुलखी नावाजली

बारात चल पड़ी। ताड़ वृक्ष के हाथ में मशालें हैं। सराटी (एक वनस्पति) घोबिन को जल्दी बुलाओ कि पाँवड़े बिछाये। रिंगणी (वनस्पति) के हाथ गंध की कटोरी है, डोरली पांव धो रही है। वह देखो, हंसमुख पीपली आ रही है। अरे ! वह सुग्रहणी भांग कहां गई ? उसकी खीर तो बहुत मीठी बनती है! चारों लोक में प्रसिद्ध हो गई है।

अब बारात द्वार पर है-

'ऐसा पांगर शहाणा वीड़े वाटे अक्षी जना
सुपारी वाटे चिलाटी पांच बोर दरवले
डालिवीच्या हाती हार, शिग वाजविते शिवर
भांगभरे शेवंती जाई जुईचा पटेडा
हार गुंफीतो मोगरा तुतारी वाजवी हीवर
घमाम्याची घाई थोर वप्हाडाच्या प्रसंगी'

चतुर पांगर (लाल फूलों का पेड़) सबको पान दे रहा है, चिलाटी सुपारी। अनार के हाथ में सत्कार के लिये हार हैं, सिंह द्वार पर शहनाई बज रही है। शेवंती सिंदूर दे रही है। जूही और चमेली चोटी में लगाने का हार बनी हुई है। मोगरा हार गूंथ रहा है, हीवर (वनस्पति) तुरही बजा रहा है। बरात में ढोल-ताशों का बड़ा शोर है।

विवाह का समय आया तो जोशी आया-

'राजगिरा जोशी आला अंजीर वर्धावा गेला
लग्न समय सम्पादिला आला सम्मान दिवस'

विवाह का समय जान जोशी राजगिरा और दूल्हे का भाई अंजीर आया। विवाह हुआ। अब सम्मान का समय है।

महाराष्ट्र में मण्डप तले बराती-बरातिनों का विशेष पद्धति से सत्कार कर भोजन कराया जाता है। जरा देखें कि कितनी वनस्पतियाँ कैसे यह कार्य कर रही हैं -

पेरू गेला बलवायासी, पाणी तापले न्हायासी,
आपुला मानध्यावया अक्षय वऱ्हाड़ी मिलाले,
भिरवती वऱ्हाड़ी, पुढे वाजंत्र्याची ध्वनी
नलया हांड या सुटतील फार वऱ्हाड़ी येती मण्डपात

अमरूद बराती बरातिनों को बुलाने गया- 'जी पानी गर्म हो गया है नहा लें और आकर हमारा सत्कार स्वीकार करें। सारे बराती एकत्र हुए, बरात सज गई। आगे-आगे बाजे बज रहे हैं आतिशबाजी छूट रही है, बरात मण्डप में आ रही है।

अब बरातियों का सम्मान हो रहा है -

कवठी पांधरली शेला गुलबाक्षी ने शिणगार केला
गुंज का जल कुंकू ल्याली मेंदी शाल पांधरली
कैल ने उत्तरीय उढ़ाये, मुल बांस ने श्रृंगार किया, घुंघची ने काजल कुंकू लगाये। मेंहदी ने दुशाले ओढ़ाये, अब बरातिनों का सम्मान हो रहा है -

वऱ्हाडणी थेतात मण्डपात
बैसू घालते कांगणी उटणे लावी
टेंभुरणी पाणी घाली वेलोवला
केस पुसे शिकेकाई ऊद घाले रामफली
ताट मांडिते पराटी पाट मांडीते बोराटी
रांगोलया काढ़ीते येरंड मीठ वाढ़ीते तीवरी
लोणचे वाठीते तुलसी करमट वाढ़ीते करवंदी
पोलया वाढ़ी साल फली भात वाढ़े बाभुली
वरण बाढ़ीते खीरणी खिरण वाढ़ धार धार
अति आग्रह करिती फार इच्छिले जेवा वऱ्हाडणी

बरातिनों के लिये कांगणी बिछौना बिछा रही है। टेंभूरणी (गुड़हल) उबटन मलती हुई वक्त-वक्त वक्त पर पानी डाल रही है। शीकाकाई केश पोंछती है। रामफली अगर जला रही है जिससे बाल जल्दी सूखें और सुगंधित हो जायें।

पराटी (जंगली पेड़) थाल सजा रही है। बोरियाँ चौली बिछाती है। अरंडी रंगोली बना रही है। तीवरी नमक परोसती है। तुलसी अचार। करौंदी शाली पूरियां परोसती हैं। बबूली भात और खिन्नी दाल। धार-धार परोसती हुई वह बरातिनों से इच्छानुसार दावत खाने का बार-बार आग्रह अनुरोध कर रही है।

ब्याह में दूल्हे का खाने पर रूठना और पंडितों का दक्षिणा पर झगड़ना बड़े मीठे-तीखे चित्र हैं ये। आम के ब्याह में ये न हों ऐसा कैसे हो सकता है ? दूल्हे का थाल सजा तो उसमें लड्डू नहीं देख वह रूठ गया। उसे छोटी आमली समझा रही है-

नवऱ्याची केली ताटुली लाडूनाहीं म्हणन रूसली
आवली समजावे धाकुली लाडू देतसे गोकूली

उधर वधू का पण्डित कटहल और वर का पण्डित जवस (काले-काले बीजों का पेड़) दुशाले पर रूठ जाते हैं तो वर की माँ झगड़ा मिटाने डंडा ले आकर उपाध्यायों की पीठ से सटा कहती है, अरे मरे ओ! क्यों लड़ते हो-

भिलून आली वरमाय / तिनं घेतली हाती काठी/लागली उपाध्याच्या पाठी/कारे मेल्यांनों भांडता ?

'अंजीर के विवाह' गीत में निमन्त्रण देने की भागदौड़, वर-वधू पर हल्दी चढ़ाने आई सुवासिनों की धूम, दूल्हा-दुल्हन के भाई-बहन के ठाट जिन्हें क्रमश: वर्धावा और करवली कहा जाता है, हनुमान मन्दिर में पूजा और बायना भरने के विशेष उल्लेख प्राप्त होते हैं।

कुत्ते जिस बरात में जाते हैं उसमें बंदर परोसगारी करते हैं। मेंढ़कों का वाद्य वृन्द है। दूल्हा बना है खरगोश, दुल्हन है घोरपड़।

मेथीबाई के विवाह गीत में शाकभाजियों की विस्तृत नामावलि है जो अपनी-अपनी अदाओं से झूमते-झामते बरात में शामिल होते हैं। लौकी दूल्हा बनी है पर कौनसी ? गोलवाली, मोटे पेट की जो हास्य की सृष्टि करती है। इस विवाह में चाँदोबा (चन्द्रमा) भी उपस्थित है जो मंगलाष्टक शीघ्र बोलने का आदेश देता है-

चाँदोवा म्हणे लवकर चला समोर उभी केली नवरीला
मंगलाष्टके जलदी बोला!

किन्तु इस विवाह गीत की अप्रतिम पंक्ति है, चंदन बथुआ की व्यथा। 'अरे हमें वहाँ कौन पूछने वाला है ?' सच है, धनीमानी अपने विवाह में गरीब रिश्तेदारों की उपेक्षा भी तो कर देते हैं न! मेंथीबाई के ब्याह में चंदन बथुआ की उपेक्षा में वही पीड़ित हृदय पुकार उठा है -

'चंदन बटवा रूसला मानाला कोण पुसतो तिथे आम्हांला'

वैसे भी महाराष्ट्र के शाक-भाजी आस्वादकों में बथुआ प्रिय साग नहीं है। बैंगन और आलू के आगे तो कतई नहीं, यह हकीकत है कल्पना नहीं।

अब आप शब्द रंजन समाचार पत्र इस लिंक पर भी पढ़ सकते हैं- https://thetimesofu-daipur.com/shabd-ranjan/

पोथीखाना

'कालजयी भारतीय ज्ञान' उम्दा पुस्तक

'कालजयी भारतीय ज्ञान' के लेखक प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा यूनेस्को संचालित महात्मा गांधी शांति व स्थायी विकास संस्थान, नई दिल्ली के अध्यक्ष हैं। इसके अतिरिक्त वे शिक्षा मंत्रालय की भारतीय ज्ञान-पद्धति पर उच्चाधिकार प्राप्त समिति व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद् के सदस्य हैं। प्रो. शर्मा उदयपुर में पैसिफिक विश्वविद्यालय समूह के समूह अध्यक्ष हैं तथा 'स्वावलंबी भारत अभियान' के भी राष्ट्रीय समन्वयक हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में हमारे प्राचीन वांङ्मय यथा-वेदों, पुराणों, ब्राहाण ग्रन्थों, उपनिषदों, आरण्यकों, रामायण, महाभारत एवं प्राचीन सनातन हिन्दू ग्रन्थों में उन्नत आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के सन्दर्भ विवेचित हैं।

इनमें ब्रह्मांड की श्याम ऊर्जा, ब्रह्मांड की उत्पत्ति का वैज्ञानिक विमर्श, सौरमण्डल रहस्य, गुरुत्वाकर्षण का प्राचीन वैदिक व अन्य शास्त्रों का सन्दर्भ ज्ञान, प्रकाश की गति का वैदिक विमर्श, ग्रहण का वैज्ञानिक विवेचन आदि की शास्त्रोक्त व्याख्या की गई है। वेदों में लोकतंत्र, गणराज्य एवं राष्ट्र की प्राचीन संकल्पना, राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव का वैदिक विमर्श, राजपद व उसकी मर्यादाएं, राजा या शासनाध्यक्ष की वैदिक शपथ, प्राचीन बहुस्थानिक व्यवसाय के सन्दर्भ, उद्योग, व्यापार व वाणिज्य लोक वित्त के प्राचीन सन्दर्भ आदि की भी व्याख्या प्रस्तुत पुस्तक में की गई है।

पुस्तक में उन्नत शब्द विज्ञान, उन्नत भौतिकीय, रासायनिक व गणितीय ज्ञान के सन्दर्भों का भी विवेचन किया गया है। वैदिक सूर्योपासना के वैश्विक प्रसार और अमेरिकी पुरावशेषों पर भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव के सन्दर्भों का भी विवेचन किया गया है। वेदों में सार्वभौम राष्ट्र व शासन पद्धतियों की अवधारणा, राष्ट्र, राज्य व राजशास्त्रों के वैदिक विवेचनों की भी समीक्षा की गई है। कुल मिलाकर यह यशस्वी कृति भारतवर्ष के समृद्ध, समुन्नत, सर्वमान्य ज्ञान-परम्परा का एक वृहद् व व्यावहारिक विश्वकोश है, जिसका अध्ययन करना हमें नई ऊर्जा, उत्साह और आत्मविश्वास से समादृत करेगा।

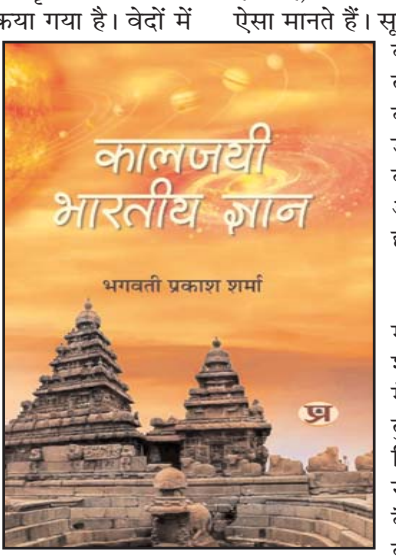

पुस्तक लेखक प्रो. शर्मा प्राचीन भारतीय ज्ञान सम्पदा के बहुविज्ञ विद्वान और जाने माने व्याख्याता हैं। उन्होंने ऐसी कई स्थापनाएं दी हैं जिन्हें आम पाठक एक बंधीबंधाई परम्पराशील मान्यता से अपने को जोड़े हैं। एक वैज्ञानिक तत्ववेत्ता अध्येता के रूप में जो प्राचीन ग्रन्थों में लिखा गया है, उसके आधार पर अनेक मान्यताओं को सही रूप में प्रस्तुत किया है।

उदाहरणार्थ- ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है कि अंतरिक्ष में सूर्य कभी न उदित होता है, न अस्त ही होता है। अल्पज्ञ लोग ही ऐसा मानते हैं। सूर्य जब भूमण्डल के एक भाग को प्रकाश युक्त करता है, तब दूसरे में अंधकार व दूसरे भाग का उसके सम्मुख होने पर वह उस दूसरे भाग को प्रकाशित करता है और घूमकर उल्टी ओर जा चुके भाग में अंधकार होने से वहाँ रात्रि होती है। (पृष्ठ 36)

राजा या राष्ट्र प्रमुख की मातृभूमि पर सर्वस्व अर्पण की शपथ में स्पष्ट कहा गया है- मैं अपनी मातृभूमि व उसके दु:ख व कष्टों से मुक्ति के लिए स्वयं सब प्रकार के कष्ट सहने को तत्पर हूँ। वे कष्ट कैसे भी, कहीं से आवें और कब आवें, मुझे इसकी कोई चिंता या भय नहीं है। (पृष्ठ 163)

यजुर्वेद में राष्ट्र की व्याख्या इस प्रकार मिलती है- ऐसा जन समूह जो एक सुनिश्चित भूमिखण्ड में रहता है, संसार में व्याप्त व इसे चलाने वाले परमात्मा अथवा प्रकृति के अस्तित्व को स्वीकार करता है, बुद्धि को प्राथमिकता देता है और विद्वजनों का आदर करता है तथा जिसके पास अपने देश को बाहरी आक्रमण और आंतरिक, प्राकृतिक आपत्तियों से बचाने एवं सभी के योगक्षेम की क्षमता हो, वह एक राष्ट्र है। (पृष्ठ 183)

मंत्रिमण्डल के गठन में चारों वर्णों का प्रतिनिधित्व आवश्यक बताते कहा गया है- महाभारत शान्ति पर्व (85/7/9) में 37 सदस्यीय मंत्रिमण्डल में 3 शूद्र व 1 सूत आवश्यक बतलाए हैं। महाभारत के इस श्लोक के अनुसार मंत्रिमण्डल की संरचना में 4 विद्वान् साहसी ब्राह्मण, 8 वीर क्षत्रिय, 21 धनी वैश्य, 3 शुद्र व पुराणों में पारंगत 1 सूत की संख्या अनिवार्य बतलाई है। यहां शूद्र व सूत की संयुक्त संख्या 4 है और मंत्रिमण्डल में ब्राह्मण भी 4 ही सुझाए हैं। (पृष्ठ 192)

रोजगार केंद्रित अर्थ चिंतन पर चाणक्य ने लिखा है, मनुष्याणां वृत्तिरर्थ:, जिसका आशय है, सम्पूर्ण प्रजा या रोजगारक्षम व्यक्तियों को वृत्ति अर्थात् आजीविका या रोजगार प्रदान करना अर्थशास्त्र है। मनुष्यवती भूमिरित्यर्थ: से आशय है राज्य की भूमि पर बसे लोगों के योगक्षेम अर्थात् उनकी आवश्यकताओं पूर्ति व उन्हें प्राप्त सुविधाओं के रक्षण की व्यवस्था अर्थशास्त्र है। (पृष्ठ 205)

इस प्रकार कुल 43 अध्यायों में प्राचीन भारतीय ज्ञान सम्पदा को बड़े विस्तार से वर्णित किया गया है। कुल 400 रूपये मूल्य की यह पुस्तक प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली से उपलब्ध है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

युवक-युवतियों के लिए लोकधुनों से स्पंदित रचनाएं तैयार हों

- जगदीशचन्द्र माथुर-

हम लोगों का कर्त्तव्य है कि आजाद भारतवर्ष की नई पीढ़ी के परिवर्तित वातावरण को ठीक तरह समझें। 1000 ईस्वी से पहले के भारतीय समाज पर यदि हम दृष्टि डालें तो प्राचीन नाटकों तथा अन्य प्रकार के विवरणों से ज्ञात होता है कि भारतीय युवक और युवतियां सामूहिक रूप से त्वरित गति और ताल लय से स्पंदित हर्षोल्लासपूर्ण गति और नृत्य के बहुत शौकीन थे। समाज के सभी वर्गों के युवक और युवतियों का यही हाल था।

दंडी के दशकुमार-चरित में एक राजकुमारी द्वारा जनसाधारण के सम्मुख किये गये कंदुक नृत्य का वृतान्त मिलता है। अनेक ऐसे प्रसंगों का उल्लेख मौजूद है जिनसे यह जान पड़ता है कि परवर्ती भक्तिकालीन समाज तथा पिछले 100 वर्षों के सुधारवादी समाज द्वारा उल्लासमय गान-नृत्य के प्रति उदासीनता पर जो बल दिया गया वह प्राचीन भारतवर्ष में नहीं था। कारण जो समाज स्वाधीन होता है उसके युवक और युवतियां हमेशा सामूहिक उल्लास के प्रेमी रहते हैं। चलती धुनों के गीत और तरह-तरह के उत्सवों में स्वयं शामिल होने में झिझकते नहीं लेकिन जब वही समाज परतंत्र हो जाता है और राजनीतिक बन्धन उसकी सामाजिक अभिव्यक्ति पर भी आरूढ़ हो जाते हैं तब धर्म अथवा सुधार के नाम पर स्वच्छंद उल्लास और गतिमय रसास्वादन को हेय दृष्टि से देखा जाने लगता है।

जो समाज स्वाधीन होता है उसके युवक और युवतियां हमेशा सामूहिक उल्लास के प्रेमी रहते हैं। चलती धुनों के गीत और तरह-तरह के उत्सवों में स्वयं शामिल होने में झिझकते नहीं लेकिन जब वही समाज परतंत्र हो जाता है और राजनीतिक बन्धन उसकी सामाजिक अभिव्यक्ति पर भी आरूढ़ हो जाते हैं तब धर्म अथवा सुधार के नाम पर स्वच्छंद उल्लास और गतिमय रसास्वादन को हेय दृष्टि से देखा जाने लगता है। फिल्मी गीतों का प्रमुख दोष यह है कि चूंकि काव्यविम्ब और भावना की उत्कृष्टता पर ध्यान नहीं दिया जाता इसलिए विषयवस्तु की दृष्टि से अधिकतर फिल्मी गीत सस्ते और अस्थायी होते हैं।

इसलिए मेरी मान्यता है कि 1947 के बाद की पीढ़ी में आज दिन हम जो चटपटे गीतों और बेरोक अंग-संचालन वाले सामूहिक नृत्यों के लिए बढ़ता हुआ शौक देखते हैं, हमें उससे घबराना नहीं चाहिए। यदि यह पीढ़ी इस तरह के अनुभव के लिए पाश्चात्य संगीत और नृत्य की ओर झुक रही है तो इसका उत्तरदायित्व हम लोगों पर है।

इस झुकाव को रखने का तरीका यह नहीं है कि उपदेशों और बंदिशों से इन युवक और युवतियों को उचित मार्ग पर लाया जाय। इसका तरीका यह है कि हम लोग अपने किशोर किशोरियों के लिए ऐसे गीत और नृत्य तैयार करायें-

(1) जो मंच पर तैयारी के साथ प्रदर्शन के लिए नहीं वरन् हरेक को शामिल करने वाली सामाजिक प्रक्रिया के रूप में हों।

(2) उनका आधार हो भारतीय लोकसंगीत और लोकनृत्य जिसमें उसी किस्म की त्वरित गति और चंचल लय से भरपूर सामग्री मौजूद है जिसके लिए नई पीढ़ी विदेश की ओर कान लगाये बैठी है।

(3) इस सामग्री को तैयार करने के लिए हिन्दी फिल्मों के गीतों की लोकप्रियता के रहस्य का अन्वेषण किया जाय।

इस तरह मालूम होगा कि एक तो इन फिल्मों के गीतों की भाषा सुगम होती है और नगरों में रहने वाले लड़के-लड़कियों के लिए बोधगम्य। दूसरे इन गीतों की विषयवस्तु रूमानी होती है, उपदेशपूर्ण और देशभक्तिपूर्ण नहीं ।

कई वर्ष हुए मैंने बच्चनजी से आग्रह करके कुछ गीत तैयार कराये थे लोकधुनों के आवार पर और उनका संगीत नियोजन ही इस भांति किया गया था कि वे नई पीढ़ी के लिए रोचक हो सकें। बच्चनजी पूर्वी उत्तरप्रदेश की लोकधुनों से परिचित थे और स्वयं उन्हें गा सकते थे। कुछ ऐसे गीतों का उन्होंने प्रकाशन भी किया।

किन्तु मेरे आने के बाद यह सिलसिला रुक गया। यह भी बात है कि हिन्दी के अधिकतर कवि ऐसे काम से जी चुराते हैं। लेकिन बिना कवियों और गायकों को एक-दूसरे के निकट लाये यह योजना पूरी नहीं हो सकती।

फिल्मी गीतों का प्रमुख दोष यह है कि चूंकि काव्यविम्ब और भावना की उत्कृष्टता पर ध्यान नहीं दिया जाता इसलिए विषयवस्तु की दृष्टि से अधिकतर फिल्मी गीत सस्ते और अस्थायी होते हैं। भारतवर्ष की परम्परा यह रही है कि कवि प्राय: गायक रहा करते थे।

आधुनिक काल में ऐसा सम्भव नहीं। इसलिए सस्थाओं का यह कर्त्तव्य है कि वे दोनों को एक-दूसरे के निकट लायें। इसका एक तरीका, जिसका प्रयोग मैंने स्वयं किया है, यह है कि चुनी हुई और मधुर लोक-धुनों की रिकार्डिंग, सरल भाषा का प्रयोग करने वाले कवियों को बार-बार सुनने की सुविधा दी जाय। इस तरह बार-बार सुनने के बाद उनके लिए शायद यह सम्भव हो सके कि वे ऐसे गीत तैयार कर सकें जो शहर के लड़के-लड़कियों में लोकप्रिय हो सकें।

काव्यस्थ आत्मा की खोज

कविताएं अपने अनुभव में परिवेश का अध्ययन हो सकती हैं। वे आत्मिक सीमा से अपरिमित सृष्टि हो सकती हैं। डॉ. कविता मिश्रा का काव्य संग्रह 'ब्रह्माण्ड का घोषणा पत्र एवं अन्य कविताएँ' ऐसा ही सर्जना कोश है। यह काव्य- संग्रह ब्रह्माण्ड एवं वेद पर आधारित है। समाज में मनुष्यों के बदलते पारस्परिक संबंध उनके विचार, भाव में होते परिवर्तन व बदलती परिस्थितियां हमें सोचने पर मजबूर करती हैं कि क्या मनुष्य तत्व की परिभाषाएं आने वाले युग में ऐसी लिखी जाएंगी, जिसमें मनुष्यता का नामोनिशान न होगा। ऐसे में समाज में मनुष्यता कायम रखने के लिए हमें ऐसा साहित्य लिखना ही होगा जिससे मनुष्यता कायम रहे। कवयित्री के कहे अनुसार-

'तनावग्रस्त मनग्रन्थि के लिए ऐसा साहित्य रचा जाना चाहिए जिससे जीवन में चित की प्रसन्नता हो, तब मधुवात की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।'

असल में कोई भी साहित्य शब्दों का जोड़ नहीं होता। शब्द चुनते समय कवि का ध्यान अर्थ पर जाना जरूरी है क्योंकि, एक ही अर्थ के द्योतक बहुधा अनेक पर्यायवाची शब्द होते हैं। शब्द का कविताओं में प्रयोग ऐसा होना चाहिए जो जन प्रयोग हो। कवयित्री डॉ. किरण मिश्रा ने अपने काव्य- संग्रह में इस बात का ध्यान रखा है कि मुक्त, स्वतंत्र, स्वच्छन्द आदि शब्द एक ही अर्थ बताते हैं और लघु अर्थ विशेषता रखते हैं। देखिए -

आत्मा के संशय हटाती
सर्वोच्च की इच्छा जगाती
नव चेतना रचाती
कौन है जो भोर में चली आ रही है
कोई ज्योतिर्मय आकृति मुक्ति दिला रही है...।

उपरोक्त कविता में भाषा, शिल्प और काव्य-चेतना अद्भुत है। 'उषा' पर हिन्दी भाषा में अनेक कविताएँ लिखी गई, लेकिन उनमें भौतिक जगत में मनुष्य की समान्यताओं को ही अभिव्यक्त किया गया था। प्रस्तुत कविता में सर्वोच्च इच्छा व मार्गदर्शिका के रूप में न सिर्फ 'उषा' को चित्रित किया गया है। 'कोई ज्योतिर्मय आकृति मुक्ति दिला रही है' लाइन का बार- बार प्रयोग उच्चारण ध्वनि और कविता के अर्थ को बढ़ाने के साथ- साथ गीतमय बना रहा है।

इस काव्य- संग्रह की सबसे महत्वपूर्ण बात कविता में प्रयोग किए गए शब्द हैं। साधारणतः प्रचलित शब्दों का प्रयोग कवयित्री ने नहीं किया है, बल्कि सलक्ष्यपूर्त शब्दों का प्रयोग किया है। शब्द संकेत ही होते हैं, जो कवि के भावों को पाठक तक पहुंचाते हैं। भावों और विचारों की भाषा को मूर्त रूप देने की कला कवयित्री डॉ. किरण मिश्रा को बखूबी आती है। एक नमूना देखिए --

अ से ज्ञ के बीच झूलते हम
नट हैं काल चक्र के
तुम्हारे हमारे संकल्प और सृजन के बीच
सम्भावना और अस्तित्व के बीच
फैली भाषा
इस ब्रह्माण्ड की सम्पूर्ण सृष्टि है।
जब तन के अंतरिक्ष में छितराए शब्द
मन के चमकते तारे का अंत
कर देते हैं बड़ी निर्ममता से,
तब दो परमाणुओं के बीच के खाली स्थान की पूर्ति ये भाषा ही करती है और नवसंवत्सर आरम्भ हो जाता है...।

काव्य-संग्रह में कुछ ऐसे शब्द जो वैदिक ग्रंथों से लिए गए हैं। उनका लेना शायद इसलिए भी जरूरी था कि साधारण भाव-व्यंजना के लिए साधारण शब्द की दरकार होती है, वहीं दार्शनिक व उच्च विचारों की अभिव्यक्ति के लिए कवि को संस्कृत भाषा का उपयोग करना पड़ा होगा जो कविता के श्रेष्ठ सृजन को दर्शाता है। काव्य-संग्रह में हिन्दी के कुछ पुराने शब्दों का प्रयोग बड़े ही कलापूर्ण ढंग से किया गया है। कवयित्री ने भावों की गहनता, सूक्ष्मता व उच्चता का ध्यान अपनी भाषा में रखा है जो अत्यंत दुष्कर था।

उचित शब्द-संकेतों के द्वारा ब्रह्माण्ड की कविताएं रची गई हैं। जो कविताओं को अलग अर्थ ही नहीं प्रदान कर रहा है बल्कि श्रेष्ठ भी बना रहा है। भाषा और उसका संरचनात्मक रूप हमें इसके दोहरे रूपों में अर्थ की ओर ले जाता है। कविता में विचार दो तरह से प्रकट होता है- बाहरी और आंतरिक अर्थ के रूप में। बाह्य अर्थ कविता के वर्णन के माध्यम से उस पर हावी हो जाता है। फिर भी, यह आंतरिक अर्थ को अपने कथा पैटर्न या काव्यात्मक उत्कृष्टता के माध्यम से अपने आप में आने की अनुमति देता है। कविता में बाहरी अर्थ कुछ हद तक अर्ध-पारदर्शी भूमिका निभाता है। यह अपनी पूर्णता तब प्राप्त करता है जब यह पूरी तरह से पारदर्शी हो जाता है और यह प्रकट करता है कि इसके नीचे क्या है ।

सर्व भाषा ट्रस्ट, दिल्ली से प्रकाशित 109 पृष्ठीय यह पुस्तक 160 रूपये की है।

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

स्मृतियों के शिखर (183) : डॉ. महेन्द्र भानावत

कारतूसों से खेलने वाले वीर कवि नाथूसिंह महियारिया

वीर कवि नाथूसिंह महियारिया का नाम लेते ही हमारे सम्मुख जहां एक ओर महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण की स्मृति हो आती है वहां दूसरी ओर मेवाड़ प्रदेश की महिमा, उसका शूरापन, उसकी तेजस्विता, सांस्कृतिक सौन्दर्य, रंगबंग, रणचातुर्य, कभी न हार खाने वाले योद्धाओं का अजेय पौरूष, सतियों के शौर्य, सतीत्व और स्वातन्त्र्य प्रेम के अगणित संश्लिष्ट चित्र उभरते हुए लगते हैं। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ यदुनाथ सरकार ने ठीक ही कहा- ''मेवाड़ में यदि किसी ने हल्दीघाटी और नाथूसिंह महियारिया को देख लिया तो समझलो उसने सबकुछ देख लिया और यदि इन्हें नहीं देखा तो उसने कुछ नहीं देखा।''

काव्य प्रेरणा महियारियाजी को बचपन से ही अपने परिवार से मिली। उनमें प्रत्येक क्षण और परिस्थिति की बड़ी जबर्दस्त पकड़ थी इसीलिए वे हर समय काव्य-सृजन में ही खोये रहते थे और गुनगुनाया करते थे। कभी सड़क पर चलते, कभी किसी की बात सुनते, कोई दृश्य देखते, कभी खेत में किसान को काम करते, कभी रेलगाड़ी में सफर करते लोगों से बात करते, कभी किसी सभा-मजलिश में, विवाह-शादी में, कभी अदालत में गवाही देते, कभी सोते समय, यहां तक कि टट्टी-पेशाब करते समय भी उद्भावना हो जाती तो वे उस भावोद्भावना को अपने मन-मस्तिष्क में बिठा लेते और तत्काल दोहा रच लेते और जहां कहीं छोटा कागज का टुकड़ा भी मिल जाता उस पर लिख लेते। इसीलिए उनका प्रत्येक दोहा जनता जनार्दन की सही लिये है। लोकजीवन से दूर कहीं बनावटी या असहज कल्पना की उपज नहीं है। उनकी तीक्ष्ण बुद्धि और अनुभूति प्रज्ञा के ऐसे पचासों उदाहरण दिये जा सकते हैं।

मैंने देखा, युद्ध के दोहों में उनकी आंखों से अगन बाण छूटते हुए। उनकी दाढ़ी के एक-एक बाल को तलवार से तीखे हो मचलते हुए। इन्द्रधनुष सी उनकी भ्रकुटि को तनते हुए। उनके नयनों में मैंने अरिदल पर गरजते हुए टूट पड़ते की वेगवती त्वरा देखी। सिर के साथ-साथ उनके धड़ को प्रकंपित होते देखा। उनके कुर्सी पर बैठे हुए शरीर को रणांगण में रणबंका होते देखा।
सतियों के वर्णन में उनमें शक्तिपुंज नारी को रणचंडी होते देखा। रजवट की शान और उसके बांकेपन को देखा। देखा केवल उन्हीं को नहीं, उनके साथ-साथ अपने आपको भी वैसी ही भावभूमि में देखा।

एकबार उदयपुर के जगदीश चौक में अल सुबह कुछ औरतें आ रही थीं। घर से कविजी का निकलना हुआ। उन्होंने देखा कि उन औरतों का साड़ी का पल्ला जमीन पर लटकता जा रहा है जिससे धूल में उस पल्ले की रेखा बन गई है। इसी पर कविराज के मन में गुनगुनाता दोहा बन पड़ा-

लीक मंडी मुळवाट री, बहू बळेवा जाय।
साळू हंदे छेवड़ो, रहियो धर घींसाय।।

इसी प्रकार एकबार सर्दी के मौसम में कविजी रेलगाड़ी की यात्रा कर रहे थे। बीच में कहीं बरसात हो गई थी तो हवा ठण्डी-ठण्डी गंध लिए सुवास दे रही थी। वहीं बैठे एक यात्री ने कविजी से कह दिया कि कैसी पड़वाई छूटी है। उसका कहना हुआ कि महियारियाजी ने तत्काल यह दोहा सुना दिया-

वरसायो खग पीव री, घर पर रगत अछेह।
हेली आवे जैण हूं, परवाई बिण मेह।।

राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद तो इन कवि से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें शान्ति और फुर्सत से सुनने के लिए राष्ट्रपति भवन में आमंत्रित किया जहां रजपूती, रजपूत और उससे जुड़ी शूरवीरता के दोहे सुन रोमांचित हो उठे। सतियों सम्बन्धी दोहे सुनकर तो उनकी आंखें तक डबडबा आई। उन्होंने सती विषयक यह दोहा तो तीन-चार बार कवि-मुख से सुना-

पागां वाळा सूरमा, खागां कठै जरूर।
बैठ अगन बिच बोळणा, साड़ी वाळा सूर।।

उदयपुर के साहित्य संस्थान में जब मैं डॉ. मोतीलाल मेनारिया के साथ बैठकर ग्रन्थ सम्पादन का काम करता था तब कोई दो-तीन बार नाथूसिंहजी को उनके साथ अति निकट बैठ सुनने समझने का अवसर मिला। चूंकि डॉ. मेनारियाजी-नाथूसिंहजी आपस में घनिष्ठ मित्र थे इसलिए उनके आपस में कई हंसी-मजाक भरी बातें भी होती रहतीं। महियारियाजी सदा डिंगल में ही बात करते पर डॉ. मेनारियाजी शायद मेरी वजह से थोड़ा हिन्दी और थोड़ी डिंगल-मेवाड़ी में बात करते। मैं उठने का प्रयत्न भी करता तो डॉ. मेनारियाजी मुझे बैठने को कह देते और फिर कविराज जब अपनी रचना सुनाना प्रारम्भ करते तो सारा वातावरण ही दूसरा हो जाता।

काव्य-पाठ के दौरान मैंने महियारियाजी को उनके दोहों के अनुरूप शब्द-शक्ति से ओजपोज होते देखा। जिस सामर्थ्य से काव्य-रचना करते उसी सामर्थ्य से उस रचना की समग्रता को जीवन्त-जागृत करने की उनमें जबर्दस्त आत्मशक्ति थी। यही नहीं, तब जैसे वे जागते हो जाते। उसी भांति श्रोताओं को भी अपने अनुरूप ज्योतिर्मय कर देते। मैंने देखा, युद्ध के दोहों में उनकी आंखों से अगन बाण छूटते हुए। उनकी दाढ़ी के एक-एक बाल को तलवार से तीखे हो मचलते हुए। इन्द्रधनुष सी उनकी भ्रकुटि को तनते हुए। उनके नयनों में मैंने अरिदल पर गरजते हुए टूट पड़ते की वेगवती त्वरा देखी। सिर के साथ-साथ उनके धड़ को प्रकंपित होते देखा। उनके कुर्सी पर बैठे हुए शरीर को रणांगण में रणबंका होते देखा। सतियों के वर्णन में उनमें शक्तिपुंज नारी को रणचंडी होते देखा। रजवट की शान और उसके बांकेपन को देखा। देखा केवल उन्हीं को नहीं, उनके साथ-साथ अपने आपको भी वैसी ही भाव भूमि में देखा। उनकी यही सार्थकता थी। यही सिद्धि थी। तब साक्षात् वीर-रस ही अवतरित नहीं होता था, मैंने तो समग्र डिंगल रस को ही उनमें उतरते-अवतरित होते देखा।

यों बहुत मुश्किल था उनसे सुनना। सुनाने के लिए उन्हें मूड में लाना। वे अपने लिखे का अर्थ भी अपना ही अर्थ सुनना पसन्द करते। जब उसके दूसरे-तीसरे अर्थ हो जाते तो उन्हें बड़ा गुस्सा आता। वे लड़ने को उतारू हो जाते। जिद्द पकड़ लेते और अड़ियल बन जाते। कहते- ''असल अर्थ तो वह है जो कवि का है। यदि वही अर्थ दूसरों का नहीं है तो क्या खाक कविता समझ में आयेगी।''

कवि सूर्यमल्ल मिश्रण की सतसई पूरी नहीं हुई मगर महियारियाजी ने तो अपनी सतसई के लिए इतने दोहे लिखे कि एक सतसई तो क्या तीन सतसइयां तैयार हो जातीं। लिखने बैठते तो कभी-कभी एक-एक रात में पूरा शतक लिख डालते। एक ही रात में झाला मान शतक लिखा। हाड़ी शतक, जयमल, पत्ता और चूंड़ा शतक लिखने में भी उन्हें कई रातें नहीं गुजारनी पड़ीं।

नाथूसिंहजी को जिन्होंने नहीं पढ़ा, समझा, वे उन्हें सामन्ती मूल्यों का कवि कहते हैं जबकि उनका काव्य एक समग्र समाज-परिवेश और संस्कृति-चैतन्य की धारा का ज्वलंत जोरावर है। महाराजकुमार डॉ. रघुवीरसिंह ने ठीक ही कहा- ''इस कवि को पढ़कर हम अपनी संस्कृति का आलेख प्रस्तुत कर सकते हैं।'' आज की भाषा की लड़झड़ पर अपना प्रहार करते हुए डॉ. आलमशाह की यह अभिव्यक्ति बड़ी सटीक है-''बून्दी के सूर्यमल्ल मिश्रण और उदयपुर के नाथूसिंह महियारिया, ये दोनों कवि ऐसे हैं, जिनकी कविता सारा राजस्थान समझता है।''

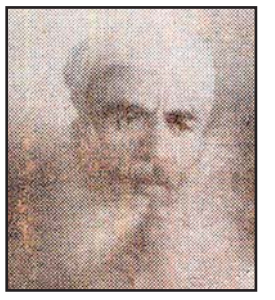

अपने दोहों का गलत उच्चारण उन्हें कभी सह्य नहीं होता। उनके पुत्र प्रतापसिंह ने अपने संस्मरण सुनाते हुए बताया कि जब उन्हें 6 वर्ष की उम्र में ही गोद रख दिया तो महाराणा फतहसिंहजी की सेवा में जाना पड़ता। तब महियारियाजी प्रसंग के अनुकूल उन्हें बोलने के लिए न केवल दोहे लिखकर देते अपितु उसके एक-एक शब्द का शुद्ध उच्चारण, दोहे की भावना के अनुसार, उसी संगत, हलचल और भावमुद्रा में करवाते और जब तक कविजी अपने अनुकूल दोहा न सुन लेते तब तक उनकी ट्रेनिंग जारी रहती। यही नहीं, गले को शुद्ध बनाये रखने के लिए न उन्हें बेर खाने देते न गन्ना ही चूसने देते।

महियारियाजी यद्यपि पूर्ण अर्थवादी थे परन्तु अपना स्वाभिमान नहीं खोते और मौका आने पर किसी को भी कुछ कहने से नहीं चूकते। अपने दोहों से उन्होंने कई बार करारी मार दी। महाराणा भूपालसिंहजी को चित्तौड़ के गाड़ोलिया लुहार सम्मेलन में जाने से रोक दिया। देवगढ़ रावजी जब शराब के नशे में अधिक डूब गये तो उन्होंने अपने दोहे से उनका पीना छुड़ा दिया। वह दोहा था-

थां कतरा त्यागी हुआ, तज दीधो थां राज।
आओ चूंडा देखवा ई दारू तजे न आज।।

इस दोहे ने रावजी को पानी-पानी कर दिया। साथ ही अपने पूर्वजों के यश-प्रताप का स्मरण दिला दिया और उनकी तुलना में स्वयं को तोलने के लिए बाध्य कर दिया। समझदार के लिए इशारा काफी होता है। शब्दों के तीर-बाण स्थायी और न मिटने वाला असर जो करते हैं।

कविवर नाथूसिंह बड़े व्यंग्यक और विनोदी थे। उनकी कल्पना शक्ति बड़ी उर्वरक और समय सन्दर्भ की तीक्ष्ण प्रज्ञा लिये थी। यद्यपि वे पढ़े-लिखे अधिक नहीं थे। शुद्ध लिखना तक नहीं जानते थे पर उनके अन्तर्मन में लय, ताल और छंद का गठन बड़ा जबर्दस्त था और हीरों के पारखी की तरह वे शब्दों के पारखी थे।

वे परम्परा के पोषक, पालक और पहरूए थे। परम्परागत संस्कृति, संस्कार, सरोकार का वे न स्वयं पालन करते अपितु अन्यों को भी समय-समय पर उसका स्मरण कराते रहते थे। इस दृष्टि से वे जीते-जागते इतिहास अध्याय थे। देश के बदलाव के साथ जब वोट का राज आया तो एक चुनाव में महाराणा भगवतसिंहजी महलों के बाहर जगदीश चौक वोट डालकर जाने की तैयारी में थे कि इधर से कविजी का आना हुआ। महाराणा को देखते ही उन्होंने उन्हें रोका और कहा कि मैं भी वोट देकर आ ही रहा हूं। तब बात करना चाहूंगा। महाराणा रूक गये। कविजी वोट देकर बाहर आये और महाराणा से कहा- ''एक कल्पना आ गई सो सुनाना चाहूंगा।'' महाराणा ने हां किया तो नाथूसिंहजी ने यह दोहा सुनाया-

अण दागल चेटक रह्यो, अण दागल हिन्दभाण।
वोटां में सामल हुआ, दागल व्हा महाराण।।

अर्थात चेटक ने कभी अपने ऊपर दाग नहीं लगने दिया और न उसके सवार राणा प्रताप ही को कभी कोई दाग लग पाया परन्तु हे महाराणा भगवत! वोट देते समय आपको दाग लगा है। यह मात्र विनोद था लेकिन कविजी ने अपनी काव्य-प्रतिभा की जिस खूबी और सुथराई से प्रस्तुति दी, वह देखते ही बनती है।

डिंगल कवि प्रो. देवकर्णसिंह ने मुझे बताया कि मेवाड़ के महाराणाओं में महियारियाजी महाराणा फतहसिंहजी से ही सर्वाधिक प्रभावित थे। जब राणा प्रताप का प्रसंग छेड़ा जाता तो वे अपनी सतसई का यह दोहा सुनाते-

मरणो छो संग साथियां, पण साथियां मराय।
पीतम घरै पधारिया, सासू दूध लजाय।।

कहते कि क्यों प्रताप डाका देकर मगरों में भाग गये? क्यों नहीं हल्दीघाटी रणक्षेत्र में उन्होंने उत्सर्ग किया? परन्तु मृत्यु से पूर्व उन्होंने प्रताप पर दो सोरठे उन्हें सुनाये जो इस प्रकार थे-

न्रप करवा नजराण, शाह अगां झुकिया सरब।
भूप पतो हिन्द भाण, झुकिया खगवाही जठै।

अर्थात् अकबर के सम्मुख सभी राजा नजराणा, निछरावल करने के लिए झुकते रहे जबकि महाराणा प्रताप तो तलवार चलाते वक्त सामान्य मुगल के सामने भी झुकते रहे।

रीत नमण री राण पढ़ियो किण घर आहड़ा।
वद वद खाग बजाण कमधां कछवाहां कठै।।

अर्थात हे आहड़ा प्रताप! तूने मुगलों के सामने झुकने की यह रीत कहां से सीखी? युद्ध में शत्रुओं को काटने के लिए बढ़चढ़ कर तलवार चलाते हुए झुकना तुम्हारे समकालीन कछवाह और राठौड़ शासक क्या जाने?

प्रो. देवकर्णसिंह ने यह भी बताया कि जब कविवर से पूछा गया कि सतसई का सर्वश्रेष्ठ दोहा कौनसा है तो वे यही कहते कि मेरे लिये सभी दोहे बराबर हैं पर जब उनसे विशेष आग्रह कर पूछा जाता तो वे यह दोहा सुनाते-

हसती होदे देखिया, तोरण चंवर ढूलन्त।
सोहे उण बिच सोगुणा, कट्ट पड़ीया कंत।।

जब इस दोहे का वे बार-बार पूरे मन से पाठ करते तो उनकी आंखें डबडबा आतीं। वे भावुक हो जाते और सारा वीर वातावरण बदला हुआ सा लगता। उनके इस दोहे पर तो उनके गुरु केसरीसिंह बारहठ (सोन्याणा वाले) भी रीझते थे।

शिकार और घुड़सवारी तथा मांस मदिरा उनके प्रिय शौक थे। वीर भावों का उत्कर्ष उनमें इतना बढ़ा-चढ़ा था कि वे अपने घरों में गादी मोड़ों पर तक कारतूसों से खेला करते थे।

उनकी वीर सतसई का प्रत्येक दोहा उनकी कल्पना का यथार्थ निचोड़ है। उन्होंने जो कुछ देखा, सुना, अनुभव किया उसे अपने हिये में खूब रचापचाकर ही इन दोहों की रचना की है। खेत रेलते समय बगुले के पंख कीचड़ से सने देखने पर कविजी की कल्पना किस उदात्तता पर पहुंची जिससे यह दोहा निकला-

धर रेली खग पीव री, हेली ऊंची झांक।
उड़ आया उण डाबरां, बगुला राती पांख।।

इस दृष्टि से उनके प्रत्येक दोहे के प्रेरणा-प्रसंगों का अध्ययन कर उसके समग्र मूल्यांकन की महती आवश्यकता है। इसके अभाव में कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व का सांगोपांग पर्यालोचन नहीं किया जा सकता। तब वे लोग भी अपनी बोलती बन्द कर देंगे जो महियारियाजी के काव्य को सूर्यमल्ल मिश्रण की छाया कहकर अपने सीमित और छोछे एवं ओछे ज्ञान का परिचय देते हैं।

जयमल शतक, पत्ता शतक और चूंडा शतक कवि की अप्रकाशित रचनायें हैं। इन शतकों का एक-एक दोहा अपने आप में वीर भावना का उमड़ता सिंधु वैभव है। इनकी एक-एक बानगी से कवि की कल्पना शक्ति की ऊंचाई-गहराई की उदात्तता का पता चलता है।

कठे अकबर पत्तो कठे, बिच अंतरो बिसाल।
लाल किलो पथरां कियो, रगत चत्रगढ़ लाल।।

अर्थात अकबर और पत्ता के बीच कितना अन्तर है। एक ने तो लाल पत्थरों से किले को लाल (लाल किला) किया जबकि दूसरे ने चित्तौड़ के किले को रक्त से लाल किया है।

हेक तना करतब जुदा, रजपूती बलिहार।
सिर पड़ियो सिंधु सुणे, धड़ बाहे तरवार।।

अर्थात् रजपूती आन-बान की यही बलिहारी है कि तन एक होते हुए भी उसके कार्य भिन्न-भिन्न होते हैं। युद्ध क्षेत्र में सिर अलग पड़ा हुआ युद्ध का बाजा सुन रहा है और धड़ जोश-खरोश में आकर तलवार चला रहा है।

रे जैमल दानी क्रपण, थू सूरां सिरमोड़।
सिर दीधो पतसाह नै, नंह दीधो चित्तौड़।।

अर्थात् हे जयमल ! तू बड़ा कृपण-दानी है परन्तु शूरों का सिरमौर है। बादशाह को तूने अपना सिर दे दिया पर चित्तौड़ नहीं दिया।

जिण दिन लाखा तात री, मोकल बांधी पाग।
चत्रगढ़ री रच्छा करण, चूंड़े बांधी खाग॥

अर्थात् चूंड़ा ने अपने भाई मोकल को राजगद्दी देकर उसे पगड़ी बांध उत्तराधिकारी ही नहीं बनाया अपितु चित्तौड़ की रक्षा के लिये स्वयं ने तलवार बांध ली। चूंड़ा का इससे बड़ा त्याग और अपने भाई के प्रति इससे बड़ा ममत्व-समर्पण और क्या हो सकता है?

देवी करणीजी उनकी परम इष्ट थी। उनका सोने का बना नावा (सूरत) कविजी अपने गले में हर समय धारण किये रहते और जब कभी उनके दोहों की प्रशंसा की जाती तब वे उस नावे को अपने सिर से लगाते और कहते- 'सब इस देवी की कृपा है।'

यह नहीं कि महियारियाजी ने सतसई और शतक काव्य ही लिखा। उनका गीत साहित्य भी बड़ा महत्वपूर्ण है। मुख्यत: उनके लिखे मेवाड़, मालवीयजी, महाराणा चतरसिंहजी, प्रताप तथा दिल्ली दरबार विषयक गीत तो बड़े चर्चित रहे हैं। और भी बहुत सारी सामग्री उनकी लिखी इधर-उधर बिखरी पड़ी है जिसका विधिवत संकलन एवं अध्ययन होना चाहिये।

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 मई 2024

सम्पादकीय

अपने मुंह मियां मिट्ठू

अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना; यह बहुत चर्चित कहावत है जो किसी व्यक्ति के आत्म प्रशंसा करने पर कही जाती है। हमारे यहां अच्छा व्यक्ति वही कहा गया है जिसकी अन्य लोग प्रशंसा करें किन्तु देखा गया है कि व्यक्ति स्वयमेव ही अपने मुंह से अपनी प्रशंसा किये नहीं थकता।

इसका एक अर्थ यह भी हुआ कि हर व्यक्ति अपनी प्रशंसा का भूखा है। कई बार अच्छा कार्य करने पर भी लोग उसकी प्रशंसा नहीं करते। ऐसी स्थिति में वह स्वयं ही अपनी प्रशंसा के पुल बांधता दृष्टिगत होता है। इसलिए यह जरूरी भी है कि उचित समय पर उचित उपलब्धि के लिए उचित ढंग से व्यक्ति की प्रशंसा होनी चाहिये।

हमारे यहां विभिन्न समाजों, संगठनों तथा समूहों द्वारा किसी की उपलब्धि पर उसका सम्मान करने, उसे पुरस्कृत करने और उसे अभिनंदित करने की परम्परा के पीछे भी यही पक्ष प्रबल है। इससे जिसका सम्मान किया जा रहा है उसे आत्म संतोष मिलता है साथ ही आगे और अच्छा कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। दूसरा अन्य लोगों को यह प्रेरणा मिलती है कि वे भी अच्छा कार्य करते रहें ताकि उनका भी ऐसा ही अभिनंदन-सम्मान हो। इसमें सम्मान करने वाला भी सुचर्चित होता है। इसीलिए ऐसे संस्थान भी हैं जो प्रतिवर्ष ही इस प्रकार के सम्मान समारोह आयोजित कर अपने को धन्य मानते हैं।

हमारे देश में सरकारी एवं गैर सरकारी ऐसे प्रसिद्ध प्रतिष्ठान, संस्थान एवं सांस्कृतिक केन्द्र हैं जो राज्य स्तरीय और भारतीय स्तर पर विशिष्टों का चयन कर उनका सम्मान करते हैं। कई सम्मान तो बड़े प्रतिष्ठामूलक बने हुए हैं जहां प्रतिवर्ष शानदार आयोजन होकर किसी विशिष्ट, अति विशिष्ट व्यक्ति के हाथों वह सम्मान प्रदान कराया जाता है।

भारत सरकार द्वारा भी ऐसे विविध क्षेत्रों में असाधारण प्रतिभा वाले व्यक्तियों का उनके स्तर-सम्मान के अनुकूल पद्मश्री, पद्म भूषण, पद्म विभूषण तथा भारत रत्न जैसे सम्मान प्रदान किये जाते हैं। ये सम्मान राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किये जाते हैं।

पान की एक दुकान पर पान खाने वालों की संख्या इतनी बढ़ने लगी कि वह दिनभर पान ही लगाकर ग्राहकों को संतुष्ट करता रहा। जब उसे लगा कि कुछ लोग प्रतिदिन ही पान खाने आते हैं पर उसका हिसाब सप्ताह में एकबार करते हैं। ऐसे लोग भी हैं जो एक निश्चित समय पर आकर 25-50 तक पान का बीड़ा अपने दिनभर के लिए खाने को ले जाते हैं।

पान वाला सबका हिसाब रखते परेशान हो गया फिर उघाई की वसूली करना एक झंझट भरा काम महसूस होने लगा। एक दिन उसके दिमाग में आया कि एक ऐसा बोर्ड ही लगा दिया जाय जिसके माध्यम से अपन को कुछ कहकर सम्बन्धों में खटास पैदा करने की बजाय ग्राहक स्वयं ही समझ जाय। यह सोच उसने एक बोर्ड लगवा दिया जिस पर लिखा था- 'नकद यहां उधार सामने।'

इसका निश्चय ही अच्छा असर पड़ा। कुछ लोग तो इस हाथ पान का बीड़ी लिया और उस हाथ रोकड़ पेमेंट करने लग गये। कुछ लोग सामने देखने लग गये किन्तु सामने तो कोई दुकान ही नहीं थी सो कुछ दिनों तक तो शान्ति से पान वाले का अच्छा सिलसिला चलता रहा। एक दिन लोगों ने देखा कि सामने वाली जगह पर भी एक दूसरे पान वाले का केबिन लग गया है। लोगों को अच्छी मसखरी हाथ लगी।

यों भी हमारे यहां मसखरों की कमी नहीं है। वे आ बैल मुझे मार, रस्ते चलते झगड़ा मोल लेने में तनिक भी हिचकते नहीं हैं सो एक भाई ने पान का बीड़ा लिया और चलता बना। जब पैसे मांगने की नौबत आई तो तू-तू-मैं-मैं होना स्वाभाविक था। इस तू-तू-मैं-मैं में दोनों पान वालों की ऐसी ठनी कि वह पूरा एरिया ही उमड़ पड़ा। अकारण ही वह बोर्ड लगाकर मुसीबत लेने पर लोगों ने उस पहले वाले को बहुत बुरा भला कहा तब जाकर उसे नसीहत मिली कि जो कुछ हुआ, ठीक नहीं हुआ। यदि वह नये वाले की जगह होता तो क्या उसे वह बोर्ड-लेखन बर्दास्त होता।

ऐसी बात नहीं है, कुछ पान वाले बड़े शौकीन-समझ के भी देखे गये। ग्राहकों को आकृष्ट करने के लिए कोई ऐसा फार्मूला हो जिसके लिए हींग लगे न फिटकरी, रंग चोखा आय। सो जब भी कोई पान खाने वाला आता उसे प्रेम से पान की गिलोली पकड़ाते वह यही कहता- यों तो आपके लिए जान हाजिर है मगर अभी तो पान हाजिर है। इस एक वाक्य से जो भी वहां आता वह इतना प्रभावित होता कि धीरे-धीरे उसके वहां पान खाने वालों की खासा भीड़ जमा होने लग गई।

अब कुछ राजनीति के रंग की चासनी भी चखिएगा। दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल जेल चले गये। अब जेल से बाहर पेराल पर कैसे आ सकें इसके लिए उन्होंने शूगर की बीमारी होते हुए भी वह सब खाना शुरू कर दिया जिससे शूगर की मात्रा में वृद्धि होती है और तब वे इलाज के लिए जेल से बाहर आ सकें। अत: जेल में शूगर की मात्रा बढ़ाने को केला, आम तथा मिठाई का प्रयोग करने लगे। इस कार्य में उनकी पत्नी खासी सहयोगी बनी। वही तो सारी खाने की चीजें स्वयं अपने घर से लाने लगी।

विरोधी पार्टी वालों की इस पर कसकर आलोचना होने लगी कि वे केजरीवालजी के जीवन के साथ खिलवाड़ करने जा रहे हैं। ऐसा बढ़चढ़कर स्टेटमेंट केजरीवाल की स्वयं की आप पार्टी के प्रवक्ता भी देने लगे। इसीलिए कहा जाता है कि राजनीति बड़ा गंदा खेल है। इसमें व्यक्ति अपनी जान की भी परवाह नहीं करता पर येनकेन प्रकारेण कुर्सी को बचाये रखने में ही सारे जोड़तोड़ लगाता रहता है।

प्रेरणा

- माधव नागदा -

उन्होंने जब मुझे अपनी प्रथम प्रकाशित कृति भेंट की तो मैं चौंक गया। खासकर पुस्तक का नाम देखकर, 'नैतिक शिक्षा।' सब जानते हैं कि वे सरकारी नौकरी में रहते काफी ऊंचे ओहदे पर विराजमान थे और यह भी कि नैतिकता और उनका छत्तीस का आंकड़ा रहा है। मैंने सोचा शायद सेवानिवृत्ति के पश्चात् इन्हें नैतिकता बोध हो गया है इसीलिए तो इन्होंने नैतिक शिक्षा पर कलम चलायी है। चाहे सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को गई हो, गयी तो है। पछतावा उगा तो है उसके मन में। मैंने उनसे हाथ मिलाया और बधाई दी। बधाई किताब की कम और उनके जीवन में आये सार्थक मोड़ की ज्यादा।

हिन्दी के एक मास्टर को पकड़ा कि भाई लिखेगा तू ,नाम मेरा लगेगा। भूमिका में तेरा आभार आ जायेगा। बदले में जहां तू चाहेगा वहां ट्रांसफर करवा दूंगा। पक्की गारंटी। अभी भी बहुत रसूखात हैं मेरे।

'आखिर आपको यह पुस्तक लिखने की प्रेरणा कैसे हुई? मैंने घिसा-पिटा सा सवाल किया। 'रिटायरमेंट के बाद ठाले तो हैं ही। मन में आया कुछ ऐसा किया जाय जिससे नाम भी हो और दाम भी मिले।' वे लय में थे। दाम का नाम सुनकर मेरे कान खड़े हो गये।

'अब शर्माजी, कविता कहानी तो अपने बस का सौदा है नहीं' और न आज के जमाने में ऐसी किताबों को कोई पूछता है।' उन्होंने मेरे कमरे की रेक पर जमी किताबों पर हिकारत भरी नजर फेंकते हुए कहा और जारी रहे, 'हाँ, स्कूलों में नैतिक शिक्षा की किताबें खूब बिकती हैं। एकमुश्त सरकारी खरीद भी हो जायेगी। फेंका दस परसेंट और ये लो हाथोंहाथ ओर्डर। बस, यही सोचकर हिन्दी के एक मास्टर को पकड़ा कि भाई लिखेगा तू ,नाम मेरा लगेगा। भूमिका में तेरा आभार आ जायेगा। बदले में जहां तू चाहेगा वहां ट्रांसफर करवा दूंगा। पक्की गारंटी। अभी भी बहुत रसूखात हैं मेरे। तो शर्माजी यह छोटी सी कहानी है इस किताब की। चाहें तो इसे आप प्रेरणा कह लें या रचना प्रक्रिया। जल्दी ही शानदार विमोचन भी करवायेंगे,बस स्पोंसर मिलने की देर है। अच्छा सा आलेख तैयार रखियेगा। और हां, प्रेरणा वाली बात किसी से कहियेगा नहीं।'

वे जिस तरह अचानक आये उसी तरह चले भी गये। रह गयी उनकी 'नैतिक शिक्षा', मेरा मुँह चिढ़ाती सी।

बनजारों में विदाई का करूण रूदन

- डॉ. श्याममनोहर व्यास -

'बनजारा' राजस्थान की एक ऐसी घुम्मक्कड़ जाति है जो अन्य प्रदेशों में पहुंच कर भी अपनी परम्परा को बहुत कुछ सुरक्षित रखे हुए है। भारत में बनजारा और यूरोप की घुमंतू जाति 'जिप्सी' दोनों का मूल निवास स्थान राजस्थान एवं पंजाब रहा है। बनजारों के लोक-साहित्य में जिन स्थानों और ऐतिहासिक पुरुषों का उल्लेख मिलता है, उनसे यह प्रकट होता है कि इन लोगों का मूल स्थान जैसलमेर से लेकर चित्तौड़ तक था।

राजस्थान के दक्षिण भू-भाग अर्थात् खेरवाड़ा तहसील व डूंगरपुर जिले में बनजारा जाति के कई गांव बसे हैं। यहाँ 'बनजारा' को 'लबाना' कहा जाता है। लेखक को इनके रीति-रिवाज एवं इनकी संस्कृति तथा जीवन प्रणाली को देखने का अवसर मिला है। आन्ध्र, कर्नाटक जैसे दक्षिण भारत में स्थित प्रदेशों में भी ये लोग बस गए हैं। प्राचीनकाल में यह जाति कई उपजातियों में बंटी हुई थी और नमक, अनाज तथा अन्य खाद्य सामग्री का व्यापार करती थी। पशुधन का क्रय-विक्रय भी इनमें प्रचलित था ।

हिन्दुओं की अन्य जातियों की तरह ही इनमें भी विवाहोत्सव के रीति-रिवाज प्रचलित हैं। पाणिग्रहण से लेकर लड़की की विदाई तक महिलाएं अपने भाव-विभोर गीतों द्वारा श्रोताओं का ध्यान बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करती हैं। विदाई के समय माता-पिता अपनी सामर्थ्य के अनुसार लड़की को दहेज देते हैं। मां-बाप सोने के आभूषण अथवा चाँदी या गिलट के गहने प्रदान करते हैं।

बरसों में तैयार किए गए कपड़े दिए जाते हैं। दहेज में दिया जाने वाला सामान गोणियों में भर कर दिया जाता है। दहेज में बैल देने की भी प्रथा है। बारात के प्रस्थान के पहले नेगों का भुगतान होता है।

वधू अपने माता-पिता, भाई-बहनों के गले मिलकर रोती है और पिता के घर में व्यतीत किए दिनों को याद कर भाव विभोर ही उठती है। विदाई का समय आ जाता है किन्तु युवती घर से बाहर निकलना ही नहीं चाहती। अन्त में उसे घर से बाहर घसीटते हुए लाते हैं। वह पिता को पकड़ कर कहती है-

बापू रे तारे पगड़ी रे पेचे मा घालन घड़ी
एक, गोक लो बापू ओ, आहिया।
धंदला-सा पेटे मा गोक लो घालन बापू
ओ, आहिया।

अर्थात् अरे बापू (पिता), तुम्हारी पगड़ी के पेच में रख कर घड़ी भर छिपा तो मुझे। तुम्हारे थुल-थुल पेट में रख कर मुझे छिपा लो। अपने भाई को पकड़ कर वह विलाप-सा करती है-

तारे झरमरिया से खीसे मा घालन घड़ी
एक गोक लो वीरन्ना आहिया
तुम्हारी झिलमिलाती-सी जेब में
मुझे एक घड़ी के लिए छिपा लो, भाई।

भाई को छोड़ कर फिर वह पिता की ओर मुड़ती है और चीत्कार उठती है-

सीक द रे बापू सीक द तारी सीकेन,
भांदू छेड़ा छेवटियो बापू ओ।

मुझे सीख दो, तुम्हारी सीख को मैं पामड़ी के कोने में बांध लूंगी। बटुए में रख लूंगी, ओ बापू इतना कहने के बाद लड़की फिर घर में चली जाती है और इस तरह बैठ जाती है जैसे उसे कहीं जाना नहीं है।

घर के लोग जबर्दस्ती उसे घर से बाहर लाते हैं। दहेज में दिया जाने बाला बैल वहाँ लाया जाता है। लोग सहायता लेकर लड़की को उस बैल पर खड़ा करते हैं। लड़की रोती हुई कहती है-

हवेली ए छूट मत जाएस मार बापू
री मड़गी, हरी भरी रेस आहिया।

मुझसे बाप की हवेली छूट न जाए। मेरा बाप का घर भरा पूरा रहे।

वर इस समय तक किसी घर में बैठा रहता है। कुछ लोग वहाँ से उसे लाते हैं। वर-वधू के घर में जाता है। देवी के सामने सुपारी, सरोता और कटारी रखकर बाहर आ जाता है। लड़की हृदय विदारक विलाप करती है-

दावड़ा, नगरी छूटी,
छाती फाटी दावड़ा,
बागे मा खादो,
बागे मा पीदो, बागे मा सूतो।
बागे मा गजायो सारी रात रे, हाँ,
सासू र हटको, ससरे रो हटको
न मानो पंथिया,
चाले चलाऊ घोड़ो भिड़ो रे हाँ।

हे दावड़ा (पति)! नगरी छूट गई, छाती फट गई, ओ पति! मैंने इस बाग में भोजन किया, इसी बाग में पानी पिया, इसी बाग में मैं सोई। सासू ने मना किया, ससुर ने मना किया, किन्तु बटोही माना नहीं। वर कहता है, अब चल भी यह लो मैं घोड़े पर चढ़ गया।

वर बड़ों को नमन करता है। वह सास को नमन करने के लिए जाता है। सास उसके गले लग कर कहती है -

बापू रे, मारी बेटी रे सो गुना वे,
तो तारे खोले मा घाल लेस रे
बापू ओ-आहिया;
बापू रे बारी गुना कीदी
तो तारे पेटे मा घालन,
समंदर कर लेस रे बापू ओ, आहिया ।

बाबू, मेरी बेटी सौ अपराध करे तब भी उन अपराधों को अपनी झोली में रख लेना ओ बाबू! मेरी बेटी बारह अपराध करे तब भी तुम अपने पेट में उन्हें इस तरह रखना जैसे समुद्र में डाल दिए गए हों।

सास से विदा लेकर वह साली व सलहज को एक-एक रुपया देकर आगे बढ़ता है। विदाई के समय वर-वधू और वर का पिता एक गाड़ी में बैठते हैं। गांव के बाहर एक स्थान पर बारात रुकती है। यहाँ महिलाएं वधू को अन्तिम विदा देती हुई गाती हैं-

राम राम सजतो आयो रे भूरिया,
रामेर दवाई छ।
नरवेली री जोड़ी लायो रे भूरिया,
राम दवाई छ।

बारात जब लड़की के ससुराल पहुंच जाती है तो वर की माता व बहिनें वर-वधू के स्वागत में गीत गाती हैं। बारातियों को भोजन खिला कर सीख दे दी जाती है। घर में देवता की पूजा कर वर-वधू को आशीर्वाद दिया जाता है। कुछ समय बाद जब वधू का भाई पीहर से उसे लेने आता है तो भाव-विभोर होकर वह गाती है-

वीरेणा सो कोसे न कोस करन आयेसे
वीरणा-आहिया,
वीरेणा सात समंदरे न पार करन
आपणी भेनड छ करन आयेसे
वीरणा आहिया।

भैया, तुम सो कोस को एक कोस समझ कर आए हो यह जानकर कि मैं ससुराल में हूं। मेरा भाई सात समुद्र पार करके यहाँ आया है। लड़की करूण कण्ठ से सहेलियों को सम्बोधित करती है-

सातेणो केला-केवड़े रे झुंडे माई ती
एकली न छोड़ चाली सातणो-आहिया।

साथ की सहेलियों, केले और केवड़े के झुंड में मुझे अकेली छोड़ चली हो, साथ की सहेलियों। जब भाई, बहिन को ससुराल से विदा कराता है तो लड़की सहेलियों एवं उसकी भावज को एक-एक रुपया देता है।

इस रिवाज को 'हाथ घालना' कहते हैं। बनजारा समाज में विवाह का लग्न निकालने वाला 'साद' कहलाता है। यह भी उसी समाज का होता है। यह सत्य है कि समय की मांग के अनुसार इस समाज में काफी परिवर्तन की लहर आ रही है।

कावड़ में भगवान महावीर का जीवन दर्शन

सन् 2001 में बीकानेर की स्वर्णलता बोथरा जब उदयपुर भ्रमण के लिए आई तो एक कावड़ भगवान महावीर की जीवनी से सम्बन्धित उन्होंने बनवाई। कावड़ चितेरा मांगीलाल ने बताया कि यह कावड़ दस पाट की सवा फीट ऊंची है। इसके सभी पाटों में दोनों ओर भगवान महावीर के गर्भ रूप में अवतरण से लेकर जन्म रूप में

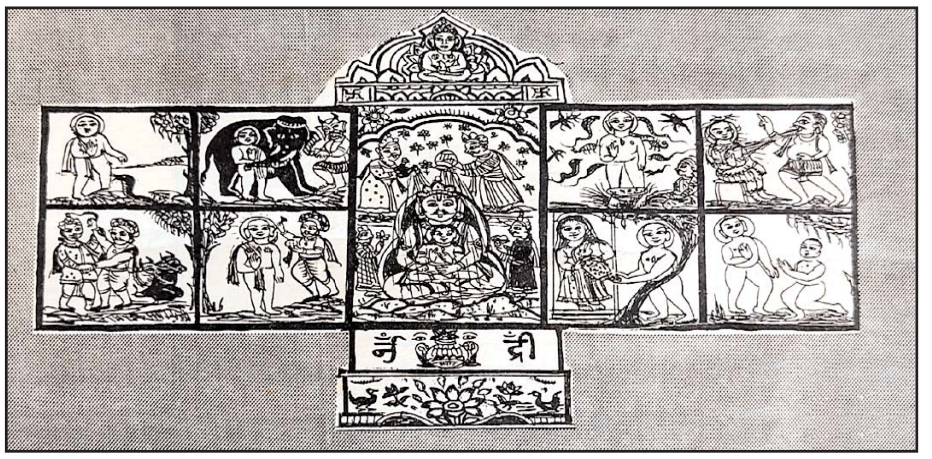

प्रकट होने, दीक्षा लेने, कैवल्य ज्ञान प्राप्त करने और निर्वाण होने के लोकजीवन के महत्त्वपूर्ण घटना-प्रसंगों को पारम्परिक कावड़ शैली में चित्रबद्ध किया है।

कावड़ में महावीर जीवन चरित के घटना-प्रसंगों के महत्त्वपूर्ण अंकनों में गर्भधारण के पश्चात माता त्रिशला द्वारा चौदह स्वप्न दर्शन, वस्त्रालंकार का त्याग और केशलुंचन, शूलपाणि यक्ष के विविध प्रतिकूल उपसर्ग, चन्द्रकौशिक का मरणांत उपसर्ग, चन्द्रबाला द्वारा उड़द के बाकले का दान, गोप द्वारा दोनों कानों में काठ की कीलें ठोकना जैसे चित्रफलक सहज ही श्रद्धालुओं को अभिभूत करते हैं।

महावीर स्वामी की कावड़ की यह लोकधर्मिता केवल दर्शनीय रूप में ही अपना प्रभाव नहीं देती है, अपितु वीरप्रभु के जीवन चरित को एक विशिष्ट गायकी द्वारा लोकरंजन का शिक्षाप्रद सशक्त माध्यम भी सिद्ध हुई है। इससे जहां कावड़ वाचन का पारम्परिक पक्ष मुखरित हुआ है, वहीं महावीर भगवान के उपदेशों को एक नए आयाम के साथ लोकगंगा का मन चंगा हुआ है।

उल्लेखनीय है कि राजस्थान की काष्ठकला यहां की लोकसंस्कृति की एक ऐसी सम्पदा है, जिसने पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है। चित्तौडग़ढ़ के पास का बस्सी गांव इस दृष्टि से विदेशियों का सांस्कृतिक तीर्थ ही बना हुआ है। पिछले पांच सौ वर्षों से यहां के खैरादी नाना प्रकार की काष्ठ कृतियां बनाकर अपनी पारम्परिक विरासत को जीवन्त किये हुए हैं। इन कृतियों में कावड़ का विशिष्ट स्थान है।

यह कावड़ एक चलता-फिरता पारम्परिक मन्दिर है जिसके आठ-दस कपाट-दर-कपाट के बाद भगवान राम के दर्शन कराये जाते हैं। काष्ठ के इन कपाटों के दोनों ओर विविध देवी-देवताओं, महापुरुषों तथा भक्तों के शिक्षाप्रद चित्रांकन होते हैं। अधिकांशत: कावड़ में राम-जीवन से सम्बन्धित चित्र होते हैं, अत: यह कावड़ 'रामजी की कावड़' नाम से लोकप्रिय है।

कावडिया भाट इस कावड़ को अपनी बगल में लिए गांव-गांव, घर-घर घूमता है और एक-एक कपाट को खोलता हुआ उस पर चित्रित प्रत्येक चित्र का एक विशिष्ट लयात्मक गायकी में वाचन कर ग्राम्यजन को घर बैठे तीर्थ का पुण्य देता है। आजादी के बाद कावड़ वाचन की यह परम्परा धीरे-धीरे लुप्त होती गई। अब

न वैसी कावड़ें ही देखने को मिलती हैं और न कावडिया भाट ही दिखाई देता है किन्तु कावड़ ने अपने स्वरूप में परिवर्तन लाकर सज्जा के रूप में अपनी पहचान कायम कर रखी है। इस पहचान को सर्वाधिक मुखरित किया काष्ठशिल्पी मांगीलाल मिस्त्री ने अपने नये-नये प्रयोगों द्वारा जिसका परिणाम यह हुआ कि कावड़ का यह पारम्परिक स्वरूप आज भी जीवन्त बना हुआ है।

अपने प्रयोगों द्वारा कावड़ शिल्पी मांगीलाल ने भीली नाट्य गवरी, महाराणा प्रताप, मीरांबाई, करणीमाता, नवदुर्गा, शिवलीला, महात्मा गांधी, विनोबा भावे तथा साक्षरता से जुड़ी कई कावड़ें न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रही है।

- म. भा.

राजस्थान का एक नवज्ञात ताम्रपत्र

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'-

देश में सबसे अधिक ताम्रपत्र राजस्थान में मिले हैं और उनमें भी मेवाड़ से प्राप्त ताम्रपत्रों की संख्या सबसे ज्यादा है। यह भी आश्चर्य है कि यहीं से बहुत से संदिग्ध ताम्रपत्र भी मिले हैं जिनसे सावधान रहने की जरूरत है।

हाल ही मारवाड़ क्षेत्र का एक ताम्रपत्र महाराष्ट्र में मिला है जो विक्रम संवत् 1231 की माघ कृष्णा 9 तिथि, तदनुसार 19 दिसंबर, 1174 का है।

यह दो पत्रों पर उत्कीर्ण है और दोनों पत्रों पर कुल 23 पंक्तियां हैं। भाषा संस्कृत और लिपि देवनागरी है। इस काल लिपि में ऐ तथा औ की मात्राएं अक्षर के पूर्व में लगाई जाती थीं और ये प्रमाण इस पर मौजूद हैं। (भारतीय प्राचीन लिपिमाला)

यह नवज्ञात ताम्रपत्र जलगांव जिले के अमलनेर गांव के पुरावस्तु संग्राहक श्री संजय भास्कर विसपुते के संग्रह में है जिन्होंने भंगार में जा रहे इस महत्वपूर्ण अभिलेख को बचा लिया। इसको सबसे पहले मित्रवर, भंडारकर प्राच्य विद्या मंदिर, पूना के उच्चाधिकारी श्री नन्द बापट ने पिछले वर्ष पढ़ा और एक संगोष्ठी में अपने परचे में स्थान दिया। श्री संजयजी ने पिछले एक

वर्ष में कई बार आग्रह किया कि मैं इसका वाचन कर कुछ और जानकारियां लिखूं। यह ताम्रपत्र राजस्थान के इतिहास के लिए महत्व का है क्योंकि इससे मंडल, महामात्य, गांव, खेत आदि के प्रमाण की सूचनाएं सामने आती हैं। यथा -

- राजस्थान में ब्राह्मणपाटक, जो संभवत: बामनवाड़ का पूर्व नाम है, 12 वीं शताब्दी में मण्डल क्षेत्र माना जा रहा था।

- यहां का महा मण्डलेश्वर राणक (चौहान) गजसिंह था जिसके अधीन महामात्य राजाक और पंचकुल (पंचायत) की सुन्दर व्यवस्था थी। यह कभी वैजल्लदेव के अधीन थी।

- इसके अधीन जमलखेड़ा के पास संगम तीर्थ (समेलिया) था, यहां वृषोत्सर्ग किया गया तब सामवेदी ब्राह्मण गोविंद को गोमती पड़लावदा गांव में गोमती नदी की उत्तर दिशा में 4 हल के बराबर (200 बीघा) भूमि दी गई। ये गांव पाली जिले में बाली के आसपास पहचाने जा सकते हैं।

यह ताम्रपत्र गुजरात और राजस्थान की तत्कालीन भूमिदान के लेखन की पूर्व मध्यकालीन परम्परा के अनुसार लिखा गया है। यथा -

- ताम्रपत्र को भगवान शिव की स्तुति से आरंभ किया गया है। कहा गया है कि शिव के शीश पर चंद्रमा की लेखा प्रलयकालीन बिजली सी दीप्तिमान है और वे सदा सृष्टि के रक्षक हैं।

- इसमें विक्रम संवत को पहले शब्दों और फिर अंकों में दिया गया है। इससे मिथ्या और मिलावट होने की आशंका नहीं है।

- अन्त में वेद व्यासोक्त वचन के रूप में 3 श्लोक का प्रयोग किया गया है। ये सब बृहस्पति के धर्मशास्त्र के अनुमोदित हैं और महाभारतादि में भी मिल जाते हैं।

- इस पर राणक गजसिंह के हस्ताक्षर हैं और दूतक के रूप में महामात्य श्री राजाक का नाम है। आरंभ में 9 के अंक का उपयोग लेखन की सिद्धि, स्वस्ति के रूप में है और समापन पर मंगल कामना है।

जनसम्पर्क के विनम्र व सृजनशील व्यक्तित्व पन्नालाल मेघवाल नहीं रहे

उदयपुर। कल ही (26 अप्रेल) लोकसभा चुनाव के लिए मतदान सम्पन्न हुआ है। आपाधापी और जिम्मेदारी का एक लम्बा दौर खत्म हुआ। सिर से बोझ सा उतरा। दिमाग में राहत की आमद हुई। दफ्तर में बैठे-बैठे अंगड़ाई का सिलसिला चल रहा है। कुछ कागज तलाशने दराज खोलता हूं तो एक पुस्तक पर निगाह पड़ती है। पुस्तक का नाम है 'राजस्थान के प्रचलित हस्तशिल्प', और लेखक पन्नालाल मेघवाल।

मन को एक खिन्नता घेर लेती है। मेघवाल साब....। अभी चार-छह दिन पहले ही तो चुनावी व्यस्तता के बीच दफ्तर के बाबूजी का फोन आया था। मुझे अच्छी तरह से याद है कि बाबूजी ने कहा था - 'सर, बाईजी को घर भेजा है। अभी उन्हें नहीं बताया, लेकिन बुरी खबर यह है कि पन्नालालजी सर अब इस दुनिया में नहीं रहे।' बाईजी यानि दफ्तर की पियोन केसरबाई। पन्नालालजी की बहन। भाई का असामयिक निधन हुआ तो घर भेजना ही था। मैं फील्ड में था। इस तरह की सूचना की कतई उम्मीद नहीं थी। चूंकि काम की व्यस्तता थी तो इस बुरी खबर को नेपथ्य में जाने में ज्यादा समय नहीं लगा। हालांकि बीच में स्टाफ के साथ एक बार उनके घर जाकर भी आया किंतु आज इस पुस्तक ने मन का घाव फिर से हरा कर दिया है।

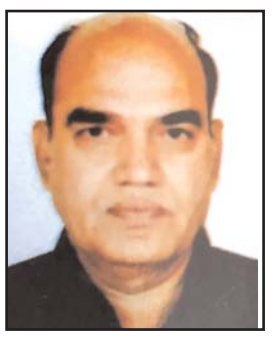

गला सूख रहा है। पास पड़ी पानी की बोतल उठाकर हलक तर करने को सिर उठाता हूं कि दीवार पर टंगा बोर्ड दिखाई पड़ता है। जिले में नियुक्त जिला जनसम्पर्क अधिकारियों की सूची में क्रमांक 19 पर लिखा है, श्री पन्नालाल मेघवाल दिनांक 12.06.1995 से 04.02.1998 तक। उक्त अवधि में मैं अपनी स्नातक की पढ़ाई कर रहा था। आज मैं उसी शख्सियत का प्रशासनिक उत्तराधिकारी हूं। अपने उस कार्यकाल में उन्होंने जो मानक स्थापित किए, आज भी कमोबेश हम उसी के इर्द-गिर्द रहते हुए अपना काम कर रहे हैं। यही नहीं कैडर अपग्रेडेशन के लिए संयुक्त निदेशक रहते हुए उनके किए गए प्रयास की बदौलत ही मैं और मेरे जैसे कई साथी अपेक्षाकृत कम समय में दो-दो पदोन्नतियां प्राप्त कर उप निदेशक पद पर पहुंच गए हैं अन्यथा एक समय था जब हमारे वरिष्ठों को विभाग में पहली पदोन्नति के लिए भी दो-दो दशक खपाने पड़े हैं।

पुस्तक की अनुक्रमणिका पर निगाह जाती है। पिछवाई कला पर आलेख से पुस्तक शुरू होती है और जयपुरी लाख कला पर समाप्त। बीच में राजस्थान की 40 हस्तशिल्प कलाओं की विशद जानकारी है। राजस्थान के प्रत्येक क्षेत्र की हस्तशिल्प कलाओं का समावेश इस पुस्तक में है। पुस्तक के फ्लैप पर मेघवाल स्वयं लिखते हैं कि - 'मैने राजस्थान के राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय हस्तशिल्पियों से उनके साथ बैठकर, उनसे साक्षात्कार कर इस पुस्तक का लेखन किया है।' करीब 14 पुस्तकें व विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित 600 से ज्यादा आलेख इस बात की तस्दीक भी करते हैं कि उन्होंने लिखने से पहले पर्याप्त शोध एवं लगातार श्रम किया। राजकीय जनसम्पर्क सेवा में रहते हुए लोक कला, शिल्प, विरासत, पर्यटन, कला व संस्कृति पर श्री मेघवाल का गहन एवं गंभीर लेखन उन्हें अलग पहचान देता है। अभी पिछले साल ही मौलिक संस्था की ओर से आयोजित कार्यक्रम 'मेला' में दलित साहित्य विषय पर आधारित सत्र में वरिष्ठ साहित्यकार व जनसम्पर्क सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री रत्न कुमार सांभरिया, वरिष्ठ आलोचक व कवि श्री कुंदन माली व जनसम्पर्क सेवा के साथी अधिकारी श्री गजाधर भरत के साथ मुझे भी मंच साझा करने का अवसर मिला था।

लेकिन अब यह सब सिर्फ स्मृतियां हैं। 06 अगस्त 1953 को जन्मी उस शख्सियत का असामयिक देहावसान हो चुका है। वे इस नश्वर शरीर को त्याग अनंत की यात्रा पर निकल चुके हैं। सुदर्शन व्यक्तित्व के धनी, हंसमुख व मिलनसार श्री पन्नालाल मेघवाल का अचानक यों चले जाना उदयपुर के साहित्य जगत ही नहीं वरन प्रदेश के जनसम्पर्क क्षेत्र के लिए भी अपूरणीय क्षति है।

- गौरीकांत शर्मा

बाजार / समाचार

ऋतु श्रीमाली को पीएच.डी. की उपाधि

उदयपुर (ह. सं.)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से ऋतु श्रीमाली को पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई है। ऋतु श्रीमाली ने कॉमर्स संकाय में बिजनस एडमिनिस्ट्रेशन विभाग से 'महिला केंद्रित श्रम कानूनों का मूल्यांकन—दक्षिणी राजस्थान में इसकी अनुपालना—अनुबंध श्रम के विशेष संदर्भ में' विषय पर शोध करते हुए पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। ऋतु श्रीमाली ने अपना शोधकार्य असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. रेणु शर्मा के निर्देशन में किया है।

गरीबों एवं वंचितों के लिये विशेष चिकित्सा प्रारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। कस्तूरबा मातृ मंदिर : डॉ. आत्मप्रकाश भाटी हॉस्पिटल, देहलीगेट एवं श्री कृष्णा हैल्थ केयर के संयुक्त तत्वावधान में रामनवमी पर हवन कार्यक्रम आयोजित किया गया। उद्घाटन के दौरान डॉ. पी. सी. मेहता ने कहा कि रामनवमी पर हम सभी को राम के आदर्शों की पालन करते हुए सत्य का पालन करना चाहिये। ऐसे अवसर पर हम दुखी-गरीब व पिछड़े वर्गों के साथ सभी वर्गों की सेवा करने का कार्य अपने हाथों में ले रहे हैं। प्रभु हमारा इस कार्य में भी ध्यान रखेंगे और हमारी स्तुति को स्वीकार कर सफलता प्रदान करेंगे। रामनवमी से ही वृद्धजनों एवं रोगियों की सेवाओं के लिए आधुनिक, उत्कृष्ट व सर्वश्रेष्ठ उत्तम देखभाल व उपचार, न्यूरो, कैंसर पीड़ित रोगी की देखभाल, फिजियोथेरेपी आदि उपचार की व्यवस्था के साथ ही 24 घण्टे एम्बुलेन्स सुविधा (मोबाइल नं. 7665588111 लाने व ले जाने के लिए) उपलब्ध रहेगी। इस अवसर पर संस्था सचिव डॉ. जयप्रकाश भाटी, डॉ. प्राची मेहता, डॉ. नीलेश मेहता, डॉ. वीना सक्सेना, डॉ. प्रमोद सक्सेना, डॉ. भावना शर्मा, डॉ. हनवन्तसिंह राठौड़ सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

कानोड़ में प्रव्रज्या महोत्सव सम्पन्न मुमुक्षु मधु बनी मनोरथश्री

उदयपुर (ह. सं.)। कानोड़ कस्बे में श्री हुक्मगच्छीय साधुमार्गी शान्त क्रान्ति संघ के आचार्यश्री विजयराज म.सा. की निश्रा में गंगाशहर निवासी मुमुक्षु सुश्री मधु भूरा की जैन भागवती दीक्षा 25 अप्रेल को भव्य रूप से सम्पन्न हुई। आचार्यश्री ने दीक्षा के बाद मुमुक्षु का नामकरण मनोरथश्री किया।

शान्त क्रान्ति संघ कानोड़ के अध्यक्ष सुरेशचंद दक ने बताया कि दो दिवसीय दीक्षा प्रसंग के चलते नगर में भव्य शोभायात्रा निकाली गई। समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष राजू भूरट थे। अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष सुरेशचंद दक ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में केन्द्रीय संघ के महामंत्री सी.ए. वीरेन्द्र जैन, कार्यकारी अध्यक्ष नरेन्द्र हिंगड़, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रोशनलाल बम्ब, माणकचंद भूरा, मानमल मेहता थे।

कानोड़ श्रीसंघ के मंत्री पारसमल मुर्डिया ने बताया कि आचार्यश्री विजयराज म.सा. ने श्रावक-श्राविका, श्रीसंघ एवं संघ के पदाधिकारियों से अनुमति लेकर मुमुक्षु को दीक्षा के प्रत्याख्यान करवाए। बड़ी दीक्षा की अनुमति बिलोदा श्रीसंघ को प्रदान की। दीक्षा कार्यक्रम में भारत के कोने-कोने से सैंकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन अनिल बाबेल ने किया।

16,600 से अधिक साइबर धोखाधड़ी जागरूकता वर्कशॉप्स आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने सुरक्षित डिजिटल बैंकिंग प्रक्रियाओं पर 16,600 से अधिक कार्यशालाएं आयोजित की और इनमें 2,00,224 से अधिक नागरिकों को जागरूक किया गया। इस दौरान लोगों को साइबर धोखाधड़ी से बचने के उपायों के बारे में विस्तार से समझाया गया। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य स्कूल और कॉलेज के छात्रों, कानून लागू करने वाली एजेंसियों, वरिष्ठ नागरिकों, स्वयं सहायता समूहों, ग्राहकों और कर्मचारियों को शिक्षित करना था।

मनीष अग्रवाल, एग्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट- क्रेडिट इंटेलिजेंस एंड कंट्रोल - एचडीएफसी बैंक ने कहा कि कार्यशालाओं में वास्तविक और रोजमर्रा के जीवन के उदाहरण, कहानियां और वीडियो शामिल थे, जिससे प्रतिभागियों को धोखेबाजों द्वारा उपयोग किए जाने वाले विभिन्न तरीकों को समझने में मदद मिली और इस तरह की धोखाधड़ी से सुरक्षित रहने के टिप्स भी मिले। एचडीएफसी बैंक पिछले चार वर्षों से देश भर में विभिन्न स्थानों पर सुरक्षित बैंकिंग पहल के तहत साइबर धोखाधड़ी जागरूकता कार्यशालाएं आयोजित कर रहा है। उन्होंने कहा कि साइबर अपराध व्यक्तियों और संगठनों के लिए समान रूप से एक गंभीर खतरा है। जागरूकता की कमी के कारण लोग साइबर धोखाधड़ी के शिकार हो जाते हैं। इसलिए, सभी आम लोगों के बीच जागरूकता पैदा करना आवश्यक है ताकि वे गोपनीय बैंकिंग डेटा किसी के साथ साझा न करें या नॉन-वेरिफाई लिंक पर क्लिक न करें। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य प्रतिभागियों को धोखेबाजों द्वारा उपयोग किए जाने वाले विभिन्न तौर-तरीकों और सुरक्षित बैंकिंग प्रक्रियाओं के बारे में शिक्षित करना है जिनका उन्हें पालन करने की आवश्यकता है ताकि वे इस तरह की ऑनलाइन धोखाधड़ी का शिकार न बनें। ये जागरूकता कार्यशालाएं एचडीएफसी बैंक के दृष्टिकोण और कोर वैल्यू यानी ग्राहक फोकस के अनुरूप हैं।

ह्यूंडई मोटर इंडिया ने लॉन्च किया 'ग्रामीण महोत्सव'

उदयपुर (ह. सं.)। ह्यूंडई मोटर इंडिया लि. (एचएमआईएल) ने ग्रामीण भारत में अपनी जड़ों को मजबूत करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है। देश के हर कोने से ग्राहकों की विविध जरूरतों को ध्यान में रखते हुए ह्यूंडई मोटर इंडिया ने 'ग्रामीण महोत्सव' की शुरुआत की है। यह जीवंत पहल ग्रामीण भारत की जीवंतता का उत्सव मनाएगी। कुल बिक्री में 19 प्रतिशत ग्रामीण बिक्री की हिस्सेदारी के साथ एचएमआईएल ग्रामीण समुदायों के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। ग्रामीण महोत्सव के तहत ह्यूंडई प्रोडक्ट डिस्प्ले, इंटरैक्टिव डेमंस्ट्रेशन और नुक्कड़ नाटक, लाइव म्यूजिक, फोक डांस एवं रीजनल टैलेंट शो जैसी आकर्षक गतिविधियों समेत कई आयोजन करेगी। इसमें कारीगरों के शिल्प, कार्निवल राइड्स, गेमिंग जोन और बेहतरीन फूड स्टॉल्स के रूप में शानदार मार्केटप्लेस का अनुभव मिलेगा। ग्रामीण महोत्सव ह्यूंडई के लिए व्यापक संभावनाओं वाले ग्रामीण भारत में अपनी उपस्थिति बढ़ाने के प्लेटफॉर्म के रूप में भी काम करेगा। ह्यूंडई मोटर इंडिया लि. के सीओओ तरुण गर्ग ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़ाव की दिशा में हमारे सतत प्रयासों का हमें परिणाम मिला है और वित्त वर्ष 2023-24 में ह्यूंडई मोटर इंडिया ने ग्रामीण बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की। हमने सालाना आधार पर 11 प्रतिशत की वृद्धि के साथ बीते वित्त वर्ष में ग्रामीण भारत में 1.15 लाख कारें बेचीं। हमें उम्मीद है कि अच्छे मानसून, बढ़ती आय और सुधरते इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ ग्रामीण बाजार का योगदान और भी बढ़ेगा।

वालमार्ट मार्केटप्लेस का समर्पित लैंडिंग पेज लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। वालमार्ट ने भारतीय विक्रेताओं के लिए कंपनी की मार्केटप्लेस वेबसाइट वालमार्ट डॉट कॉम पर एक समर्पित लैंडिंग पेज लॉन्च करने की घोषणा की, जिसके माध्यम से वे साइट पर पंजीकरण एवं बिक्री कर सकेंगे। वालमार्ट ने क्षेत्रीय स्तर पर सम्मेलनों की श्रृंखला शुरू करते हुए जयपुर में पहले वैश्विक विक्रेता सम्मेलन का आयोजन भी किया।

इन सम्मेलनों के माध्यम से संभावित विक्रेताओं को उपभोक्ताओं एवं कैटेगरी ट्रेंड्स से जुड़ी इनसाइट्स एवं जानकारी प्रदान करते हुए मदद की जाएगी और ऑनबोर्डिंग सपोर्ट व कैटलॉग सेटअप में सहयोग किया जाएगा। सालभर पूरे देश में वैश्विक विक्रेता सम्मेलन आयोजित करने की योजना है।

वालमार्ट की इमर्जिंग मार्केट्स एंड बिजनेस डेवलपमेंट वाइस प्रेसिडेंट मिशेल मी ने कहा कि वालमार्ट मार्केटप्लेस को 2021 में भारतीय विक्रेताओं के लिए खोला गया था। वर्तमान में इस मार्केटप्लेस पर भारत में बनाए गए, विकसित किए गए या असेंबल किए गए उत्पादों के हजारों एसकेयू हैं। वालमार्ट का अमेरिकी मार्केटप्लेस दुनिया का सबसे तेजी से बढ़ता हुआ ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म है। पिछले वित्त वर्ष में इसका राजस्व 45 प्रतिशत बढ़ा, जबकि वालमार्ट के विक्रेता 20 प्रतिशत बढ़े। वालमार्ट नए विक्रेताओं से कोई मासिक शुल्क या सेटअप का शुल्क नहीं लेता है। इस साल की शुरुआत में कंपनी ने न्यू सेलर सेविंग्स प्रोग्राम का एलान किया था, जिसमें प्रतिभागियों को वालमार्ट डॉट कॉम पर पहले 90 दिन रेफरल और वालमार्ट फुलफिलमेंट सर्विसेज (डब्ल्यूएफएस) फीस में 50 प्रतिशत तक की छूट मिलती है। डब्ल्यूएफएस से विक्रेताओं को अपनी इन्वेंटरी को अमेरिकी ग्राहकों के नजदीक लाने का सुविधाजनक एवं किफायती समाधान मिलता है।

एचडीएफसी बैंक के पेजैप ऐप को 'सेलेंट मॉडल बैंक' का पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक के मोबाइल ऐप पेज़ैप को 'सेलेंट मॉडल बैंक' अवार्ड मिला है। एचडीएफसी बैंक के पेज़ैप को यह अवार्ड्स पेमेंट इनोवेशन की श्रेणियों में सेलेंट मॉडल बैंक पुरस्कार समारोह में प्रदान किए गए। सेलेंट का वार्षिक मॉडल बैंक पुरस्कार बैंकिंग में प्रौद्योगिकी के उपयोग में सर्वोत्तम प्रथाओं का जश्न मनाता है और उन्हें स्वीकार करता है। पेज़ैप दुनिया भर के 36 देशों के 140+ नामांकनों में से चुने गए 19 विजेताओं में से एक है। इस अत्यधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए निर्णायक मानदंडों में स्पष्ट व्यावसायिक लाभ, उद्योग के सापेक्ष नवाचार का स्तर और प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता शामिल हैं।

पेज़ैप को ज़ेटा और एचडीएफसी बैंक द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है, जो ज़ेटा के अगली पीढ़ी के प्रोसेसिंग प्लेटफॉर्म, ज़ेटा टैचियन और इसकी विशेष इंजीनियरिंग पेशकश, ज़ेटा स्टूडियोज़ का लाभ उठा रहा है। मार्च 2023 में लॉन्च होने के बाद से पेज़ैप ने तेजी से 6+ मिलियन ग्राहक हासिल कर लिए हैं और लगभग आधे मिलियन ग्राहकों ने इसे आईओएस पर 4.8 और एंड्रॉइड पर 4.3 की रेटिंग दी है, जिससे यह फाइनेंस सेक्शन में भारतीय ऐप स्टोर्स पर टॉप रेटेड ऐप बन गया है।

एचडीएफसी बैंक के ग्रुप हेड,चीफ मार्केटिंग ऑफिसर और हेड-डायरेक्ट टू कंज्यूमर बिजनेस रवि संथानम ने अवार्ड प्राप्त करने को लेकर कहा कि सेलेंट की मान्यता हमारे ग्राहकों की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने वाले विश्व स्तरीय डिजिटल बैंकिंग समाधान प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। पेज़ैप हमारी डिजिटल परिवर्तन यात्रा का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है और अगली पीढ़ी, क्लाउड-नेटिव जारीकर्ता प्रोसेसिंग स्टैक पर निर्मित आधुनिक ग्राहक अनुभव की शक्ति का प्रमाण है।

ज़ेटा के सीटीओ और सह-संस्थापक रामकी गद्दीपति ने कहा कि पेज़ैप की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए ज़ेटा सम्मानित महसूस कर रहा है। एचडीएफसी बैंक की प्रतिभाशाली और दूरदर्शी टीमों के साथ साझेदारी में एक ज़ेटा स्टूडियो ने अद्वितीय भुगतान विकल्प प्रदान किए हैं। भारतीय उपभोक्ता. एचडीएफसी बैंक के ग्राहक मल्टीपल ऐप्स स्विच किए बिना, यूपीआई, डेबिट कार्ड या क्रेडिट कार्ड का उपयोग करके अपने खाते का उपयोग करके भुगतान करना है या नहीं,यह विकल्प चुन सकते हैं।

मोटोरोला ने लॉन्च किया मोटो जी64 5जी

उदयपुर (ह. सं.)। मोटोरोला ने मोटो जी64 5जी के लॉन्च की घोषणा की, जो इस सेगमेंट का सबसे शानदार 5जी स्मार्टफोन है। मोटो जी64 5जी ने दुनिया के पहले मीडियाटेक डायमेंसिटी 7025 प्रोसेसर और इस सेगमेंट की सबसे दमदार 6000 एमएएच बैटरी के अलावा सेगमेंट के सबसे बेहतर शेक फ्री 50एमपी ओआईएस कैमरे और क्वाड पिक्सेल टेक्नोलॉजी के साथ 15 हजार से कम कीमत वाले स्मार्टफोन बाजार में धूम मचा दी है, क्योंकि यह स्मार्टफोन सिर्फ 14,999 रुपये (ऑफ़र के साथ सिर्फ 13,999 रुपये) की कीमत पर उपलब्ध है। सबसे बेहतर प्रोसेसर, बैटरी और कैमरे जैसी खूबियों के अलावा, यह इस सेगमेंट में सबसे शानदार 12जीबी रेम + 256जीबी स्टोरेज वाला स्मार्टफोन भी है, जिसकी कीमत सिर्फ 16,999 रुपये (ऑफ़र के साथ सिर्फ 15,999 रुपये) है।

टी.एम. नरसिम्हन, मैनेजिंग डायरेक्टर, मोबाइल बिजनेस ग्रुप-भारत, ने कहा कि यह लॉन्च सही मायने में भारतीय ग्राहकों को सबसे किफायती मूल्य पर इस सेगमेंट में बेमिसाल फीचर्स को सबसे पहले उपलब्ध कराने के हमारे संकल्प को दर्शाता है, और टेक्नोलॉजी को सभी के लिए सुलभ बनाने के हमारे विजन पर खरा उतरता है। मोटो जी64 5जी खासतौर पर भारतीय बाजार के लिए डिजाइन किया गया प्रोडक्ट है, जो इस सेगमेंट के सर्वश्रेष्ठ परफॉर्मेंस, एडवांस बैटरी, कैमरा और मनोरंजन के बेमिसाल अनुभव जैसे फीचर्स से लैस है। इस लॉन्च के ज़रिये हम भारतीय स्मार्टफोन बाज़ार में मौजूदा पेशकशों से आगे निकल गए हैं, साथ ही हम लोगों को अव्वल दर्जे के स्मार्टफोन और कनेक्टिविटी का गहराई से अनुभव करने में सक्षम बना रहे हैं, जैसा पहले कभी नहीं हुआ।

4 मई को होगा सेंटपॉल्स स्कूल का ग्रैंड एलुमनाई मीट- बैक टू स्कूल 2024

उदयपुर (ह. सं.)। एक छोटा कदम एक महान यात्रा की ओर ले जाता है और सेंटपॉल्स स्कूल उदयपुर की यात्रा ऐसी ही रही है। स्कूल के प्रिंसिपल फादर जॉर्ज केके ने बताया कि सेंटपॉल्स स्कूल उदयपुर ने अपनी उत्कृष्टता के 70 वर्ष पूरे होने का जश्न धूमधाम से मनाया। 16 जुलाई 1953 को सेंटपॉल सीनियर सेकेंडरी स्कूल की स्थापना 2 फ्रांसीसी पादरी फादर एडगर व फादर विक्टर और ब्रदर रेजियर ने की थी। तब से स्कूल ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और तेजी से प्रगति की है। आज सेंटपॉल स्कूल भारत के सबसे सम्मानित शिक्षण संस्थानों में अपनेआप को स्थापित कर चुका है। दो छात्रों से शुरू हुए इस स्कूल में वर्तमान में 3000 से अधिक छात्र पढ़ते हैं।

वरिष्ठ अध्यापक सोहनलाल जैन ने बताया कि इस संस्थान के गलियारों से पढ़कर निकलने वाले छात्रों ने विभिन्न क्षेत्रों में नाम कमाया है और अपनी उपलब्धियों से उदयपुर शहर और देश को गौरवान्वित किया है। स्कूल में समय-समय पर पूर्व छात्रों के लिए अलग-अलग बैचों की एलुमनी समारोह आयोजित होती रहती है पर बकायदा कोई एलुमनी एसोसिएशन नहीं बनी हुई थी। इस कमी को दूर करने के लिए प्लेटिनम जुबली के अवसर पर स्कूल के पूर्व छात्र 1989 में पास आउट हुए डॉ. आनंद गुप्ता को सेंटपॉल स्कूल उदयपुर एलुमनी एसोसिएशन कमेटी का अध्यक्ष एवं संरक्षक स्कूल के वरिष्ठ छात्र रहे अजयसिंह कुशवाहा को बनाया गया है।

कमेटी अध्यक्ष डॉ. आनंद गुप्ता ने बताया कि उनका पूरा प्रयास रहेगा कि एलुमनी एसोसिएशन 1953 से 2023 तक के सालों में सेंटपॉल स्कूल से पास हुए सभी विद्यार्थियों का विवरण इकट्ठा कर सभी को जोड़ने की संभावना में आगे बढ़े। डॉ गुप्ता ने बताया कि इसी कड़ी में 4 मई को स्कूल के भूपालपुरा स्थित प्रांगण में एक एलुमनी मीट का आयोजन होने जा रहा है जिसका नाम है ग्रेड एलुमनी मीट 2024 है। इसे सफल बनाने में पूर्व छात्र नितिन माथुर, सौरभ सिरोया, हिमांशु गुप्ता, एन के जैकब, लीगल एडवाइजर अविनाश कोठरी, आईटी एक्सपर्ट करण गर्ग और अरुणाभ मित्तर आदि दे रहे हैं।

कमेटी सचिव सौरभ सिरोया ने बताया कि फादर जॉर्ज के के, अजयसिंह कुशवाहा- संरक्षक, सोहनलाल जैन, सी पी तलेसरा, विनयदीप सिंह-वरिष्ठ सलहाकार, डॉ आनंद गुप्ता - अध्यक्ष, नितिन माथुर- उपाध्यक्ष, सौरभ सिरोया - सचिव, दीपक शर्मा- संयुक्त सचिव, मनीष गोधावत-कोषाध्यक्ष व एग्जीक्यूटिव मेंबर्स रवि सिंघल, एन के जैकब, जयंत गुप्ता, अविनाश कोठरी, सुलभ धर्मावत, एलुमनी एसोसिएशन के सदस्य हैं।

इस दौरान एलुमनाई मीट-बैक टू स्कूल 2024 के पोस्टर व वेबसाइट www.spuaa.com का अनावरण हुआ। वेबसाइट का मुख्य उद्देश्य देश विदेश में निर्वासित स्कूल के पूर्व छात्रों को एक दूसरे से जोड़कर रखना है और एक ऐसा डेटाबेस उपलप्ब्ध कराना है जिससे ज़रूरत के समय अथवा अनजान गंतव्य में यह वेबसाइट एक सहारा प्रदान कर सके। पोस्टर व वेबसाइट को बनाने में स्कूल के पूर्व छात्र करण गर्ग की मुख्य सहभागिता रही ।

उपाध्यक्ष नितिन माथुर ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान कक्षा 9-12 के छात्रों के लिए एक विशेष इंटरेक्टिव सेशन का आयोजन होगा जिसमें पूर्व छात्र रहे मोटिवेशनल स्पीकर्स छात्रों को जीवन में सफल होने के मंत्र देंगे। इस दौरान सम्मान समारोह भी आयोजित होगा जिसमें स्कूल से सेवानिवृत्त वरिष्ठ शिक्षकों व सेवार्थ शिक्षकों को सम्मानित किया जाएगा। इस दौरान पूर्व छात्रों का विद्यालय दौरा, वर्तमान और पूर्व छात्रों में ओपन सेशन, फोटोग्राफी सेशन और फुटबॉल, वॉलीबॉल, बास्केटबॉल प्रतियोगिताएं होंगी। कार्यक्रम में 500 से ज्यादा पूर्व छात्रों के भाग लेने की उम्मीद है।

जल बचत के साथ जल स्तर बढ़ाना जरूरी : मेहता
देश के विभिन्न राज्यों से आये युवाओं से हुआ संवाद कार्यक्रम

उदयपुर (ह. सं.)। आज मानवता एवं समाज के लिए उच्चतम मानकों एवं स्तर पर निस्वार्थ सेवा और स्वयंसेवा लिए युवाओं को तैयार तथा प्रोत्साहित करना, समावेशी विकास की दिशा में युवाओं को सशक्त करना जिससे कि वे अग्रणी भूमिका निभा सकें और सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सुशासन हेतु अपेक्षित परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य कर सकें। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि युवा सामने नए दृष्टिकोण लाते हैं। वे अक्सर सामाजिक मानदंडों पर सवाल उठाते हैं और सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण और मानवाधिकार जैसे क्षेत्रों में बदलाव पर जोर देते हैं। उनका आदर्शवाद और स्थापित प्रणालियों को चुनौती देने की इच्छा गंभीर मुद्दों के समाधान के लिए महत्वपूर्ण है। ये विचार देश के विभिन्न राज्यों से आये युवाओं से हुए संवाद कार्यक्रम में उभर कर सामने आये। यह संवाद महान सेवा संस्थान कार्यालय में आयोजित किया गया। युवा पहले अलसीगढ़ गए जहां उन्होंने संस्थान द्वारा संचालित वाटर इकोनामिक जोन में विभिन्न जल संरक्षण के कार्यों का अवलोकन किया साथ ही क्षेत्र में आजीविका संवर्धन एवं कृषि विकास के कार्यों के बारे में भी जाना।

महान सेवा संस्थान के अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा ने सभी का स्वागत करते हुए संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी।

अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेंद्र मेहता ने कहा कि आज हमें जल बचत करने के साथ-साथ जल स्तर को भी बढ़ाना होगा। जल प्रबंधन भविष्य की जल आवश्यकताओं से समझौता किए बिना वर्तमान जल आवश्यकताओं को पूरा करने की प्रक्रिया है। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि आज सभी को स्वच्छ पानी मिले।

स्टूडेंट फॉर डेवलपमेंट के बैनर तले आए युवाओं को बाल सुरक्षा नेटवर्क के राज्य संयोजक बी.के. गुप्ता ने सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने के लिए जुनून के साथ आगे आने की बात कही। उन्होंने सामाजिक क्षेत्र के रचनात्मक, विकासात्मक एवं अधिकार आधारित कार्यों को करने की प्रक्रिया को समझाते हुए पर्यावरण विनाश से विशेष रूप से बालकों के जीवन में होने वाले वाली चुनौतियों को बताते हुए नेटवर्क द्वारा अपनी सहभागी संस्थाओं के साथ मिलकर किए जा रहे कार्यों को साझा किया।

ये युवा स्टूडेंट्स फॉर डेवलपमेंट एफ.एस.डी के तत्वाधान में पर्यावरण व विकास विषय पर अध्ययन करने हेतु उदयपुर आए हुए हैं। संवाद में एफ.एस.डी के राष्ट्रीय संयोजक मयूर झावेरी के नेतृत्व में दिल्ली, हिमाचलप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान के शोधकर्ता एवं छात्र थे।

डॉ. लुहाड़िया ने की चेस्ट सम्मेलन में भागीदारी

उदयपुर (ह. सं.)। दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय चेस्ट सम्मेलन बोंकोपल्मोनरी वर्ल्ड कांग्रेस में गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के टीबी एवं चेस्ट रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अतुल लुहाड़िया ने उदयपुर से विशिष्ट वक्ता के रूप में भाग लिया। उन्होंने गर्भवती महिलाओं ,स्तनपान कराने वाली माताओं, लीवर और किडनी संबंधित बीमारियों के मरीजों को विशेष परिस्थितियों में टीबी के इलाज के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने बताया कि किसी भी परिस्थिति में टीबी के मरीज को डॉक्टर के बताए अनुसार इलाज पूरी अवधि का लेना चाहिए और बीच में इलाज बंद नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर टीबी की बीमारी की जटिलताएं बढ़ सकती हैं। सम्मेलन में ही डॉ. लुहाड़िया ने एलर्जी एवं ए.बी.पी.ए. सेशन की अध्यक्षता की एवं उनको बेस्ट ओरल पेपर और ई पोस्टर प्रेजेंटेशन सत्रों में जज भी बनाया गया।

जितेन्द्र मेहता सम्मानित

राजस्थान विद्यापीठ के उदयपुर स्कूल आफ सोशल वर्क और सेंटर फॉर एक्सीलेंस एंड फाउंडेशन की इकोलॉजी सिक्योरिटी के साझे में सतत जल प्रबंधन एवं जल स्रोत संरक्षण पर राज्यस्तरीय कार्यशाला हुई। इस कार्यशाला में अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता को जल संरक्षण पर सराहनीय कार्य के लिए सम्मानित किया गया।

नंदावत अध्यक्ष, नागोरी महामंत्री बने

उदयपुर (ह. सं.)। सुभाष नगर जैन सोसाइटी के चुनाव महावीर भवन में सम्पन्न हुए। साधारण सभा की बैठक में चुनाव अधिकारी डी. सी. कोठारी, डूंगरसिंह कोठारी एवं एस. एल. मांडोत के सान्निध्य में नव निर्वाचित कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें राकेश नंदावत अध्यक्ष, दिनेश मुनेत उपाध्यक्ष, मनीष नागोरी महामंत्री, शांतिलाल कदमालिया कोषाध्यक्ष, हेमंत कोठारी मंत्री, गगन तलेसरा संगठन मंत्री एवं सहव्रत सदस्य चंद्रप्रकाश मारू, लक्ष्मीलाल जारोली, अमित लोढ़ा, प्रकाश जैन, निर्मल भंडारी को चुनाव अधिकारी ने शपथ दिलाई। निवर्तमान अध्यक्ष पारस पोखरना ने सभी का आभार व्यक्त किया।

जिंक को इंडिया सिल्वर कॉन्फ्रेंस एक्सीलेंस अवार्ड

उदयपुर (ह. सं.)। वेदांता समूह की कंपनी और देश की अग्रणी जस्ता-सीसा-चांदी उत्पादक हिंदुस्तान जिंक ने सबसे बड़े एकीकृत चांदी निर्माता के लिए प्रतिष्ठित इंडिया सिल्वर कॉन्फ्रेंस एक्सीलेंस अवार्ड 2023 जीतकर एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है।

ज़िंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि हम इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को प्राप्त कर गौरवान्वित हैं, जो हमारे संचालन में नवाचार को बढ़ावा देने के प्रति हमारे समर्पण को दर्शाता है। जिंक की सिंदेसर खुर्द खदान विश्व की दूसरी सबसे अधिक चांदी उत्पादक खदान है, जो चांदी उद्योग में कंपनी के महत्वपूर्ण योगदान को और बढ़ाती है। वर्ष 2002 में मात्र 41 टन की चांदी उत्पादन क्षमता से जिंक 746 टन की उत्पादन क्षमता करते हुए अब नेतृत्व की स्थिति में पहुंच गया है।

PIMS HOSPITAL UMARDA

पिम्स हॉस्पिटल उमरड़ा
सुपर स्पेशिलिटी हॉस्पिटल

क्या आप है नशे की लत से परेशान?

आज ही सम्पर्क करें :
पिम्स नशा मुक्ति एवं परामर्श केन्द्र

यहाँ पर हर प्रकार का नशा जैसे-

शराब, गांजा, स्मैक, चरस, गोली, भांग, अफीम, ब्राउन शुगर हेरोइन, तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी, कैप्सूल, सीरप, इंजेक्शन, पेट्रोल / डीजल / केरोसीन, फ्लूड, मोबाईल / इन्टरनेट एडिक्शन आदि का उपचार व परामर्श दिया जाता है।

मानसिक रोगो का उपचार जैसे-

डिप्रेशन, चिड़चिडापन, उदासी, ड़र, भय, टेंशन, सिरदर्द (माइग्रेन), अनिद्रा, अनचाहे विचार, शक करना, साफ सफाई का अत्यधिक ध्यान रखना, लॉक बार-बार चेक करना, अपने आप से बातें करना,, गुस्सा आना, यौन समस्या आदि का उपचार व परामर्श दिया जाता है।

डॉ. अचिंश खींवसरा
एम.डी. साइकाइट्री, असिस्टेंट प्रोफेसर

डॉ. प्रवीण खैरकर
सीनियर कंसल्टेंट एवं प्रोफेसर न्यूरोलॉजी साइकाडट्रिस्ट

डॉ. रोहन मोदी
एम.डी. साइकाइट्री

पिम्स हॉस्पिटल उमरड़ा में महावीर जयंती के अवसर पर 21 अप्रैल से 30 अप्रैल 2024 तक निःशुल्क परामर्श एवं जाँच पैकेज उपलब्ध है।

स्पेशल महावीर जयंती पैकेज

मेमोग्राफी | इकोकार्डियोग्राफी | टीएमटी | लीवर इलास्टोग्राफी (फैटी लीवर) | प्रेगनेंसी सोनोग्राफी | एनोमली स्कैन | एनटी स्कैन | फीटल इको | फीटल कलर डॉपलर | फेफड़ों की दूरबीन से जांच (ब्रोंकोस्कॉपी) | दूरबीन से पेट व आंतों की जांच (एंडोस्कोपी) | ऑडियोमेट्री | बेरा | सुनने की जांच | खून की जांच | सीबीसी | कोलेस्ट्रॉल | कैल्शियम | किडनी लीवर व थायराइड की जांच | बच्चेदानी के मुंह की जांच (पैप स्मीयर) | फ्री डायलिसिस | फ्री नॉर्मल व सिजेरियन डिलीवरी 24*7 | फ्री हर्निया हाइड्रोसील फिशर अपेंडिक्स ऑपरेशन | सोनोग्राफी कंप्लीट | ईसीजी | रैंडम ब्लड शुगर (आर. बी. एस.)

सरकारी योजनाओं में निशुल्क इलाज।
सभी इंश्योरेंस एवं टीपीए कैशलैस इलाज के लिए अधिकृत हॉस्पिटल।

PIMS HOSPITAL UMARDA
पिम्स हॉस्पिटल उमरड़ा
उमरडा रेलवे स्टेशन, उदयपुर (राज.) 313015
फोन : 0294-3510000
web : www.pacificmedicalsciences.ac.in | email : info@pacificmedicalsciences.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।